

ISSN : 2456-8856

पंजीयन संख्या RNI No.: MPHIN/2002/9510

डाक पंजीकृत क्रमांक मालवा डिवीजन/ 204 / 2021-2023 उज्जैन (म.प्र.)

UGC Care Listed and Peer Reviewed Referred Bilingual Monthly International Research Journal

प्रेषण दिनांक 30

पृष्ठ संख्या 28

# आश्वरत

वर्ष 24, अंक 220

फरवरी 2022



जो बस राखे इन्द्रियाँ, सुख-दुख समझि समान।  
सोउ अमरित पद पाईगा कहै रैदास बखान ॥

संपादक – डॉ. तारा परमार



भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन की अन्तर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका

संस्थापक सम्पादक

डॉ. पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी

संरक्षक

सेवाराम खापडेगर

11/3, अलखनन्दा नगर, बिडला हॉस्पिटल के पीछे,  
उज्जैन मो.: 98269-37400

प्रामाण्य

आयु. सूरज डामोर IAS

पूर्व सचिव-लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण वि.  
म.प्र.शासन, भोपाल मो. 094253-16830

सम्पादक

डॉ. तारा परमार

9-बी, इन्द्रपुरी, सेठी नगर, उज्जैन-456010  
मो. 94248-92775

सम्पादक मण्डल :

डॉ. जयप्रकाश कर्दम, दिल्ली

डॉ. खन्नाप्रसाद अमीन, गुजरात

डॉ. जसवंत भाई पण्ड्या, गुजरात

डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा, म.प्र.

कानूनी सलाहकार

श्री खालीक मन्सूरी एडव्होकेट, उज्जैन

## अनुक्रमणिका

क्र. विषय	लेखक	पृष्ठ
1. अपनी बात	डॉ. तारा परमार	03
2. ग्रामसभा में गणपूर्ति की समस्या : एक अध्ययन	मांगीलाल (शोधार्थी)	04
3. बौद्ध विहार में नारी की स्थिति	डॉ. मंजु यादव(रिसर्च फैलो)	09
3. बैचैन करता, 'बैचैन' का बचपन	डॉ. उमा देवी	11
4. ग्राम पंचायतों पर डॉ. भीमराव अम्बेडकर व महात्मा गांधी के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन	सुरेन्द्र (शोधार्थी)	15
अध्ययन : सिसरो व अम्बेडकर के विचारों के विशेष संदर्भ में		
5. सांस्कृतिक परिवेश और साहित्य का अन्तर्संबंध की स्थिति : एक विवेचन	डॉ. निधि शर्मा डॉ. मनीष शर्मा	18
6. 'नथी तालिम : एक नीवन शिक्षा पद्धति	मोनिका चौबे (शोधार्थी)	20
7. भूमंडलीकरण के दौर में सांस्कृतिक संक्रमण : काशी का अस्सी	मनोज कुमार (शोधार्थी )	24

## UGC Care Listed Journal

खाते का नाम – आश्वस्त (Ashwast)

खाते का नं.- 63040357829

बैंक – भारतीय स्टेट बैंक,

शाखा- फ्रीगंज, उज्जैन (Freeganj, Ujjain)

IFS Code - SBIN0030108

Web : [www.aashwastujjain.com](http://www.aashwastujjain.com)

E-mail : [aashwastbdsamp@gmail.com](mailto:aashwastbdsamp@gmail.com)

एक प्रति का मूल्य	:	रुपये 15/-
वार्षिक सदस्यता शुल्क	:	रुपये 150/-
आजीवन सदस्यता शुल्क	:	रुपये 1,500/-
संरक्षक सदस्यता शुल्क	:	रुपये 10,000/-

विशेष : सम्पादन, प्रकाशन एवं प्रबंध अवेतनिक तथा पत्रिका में प्रकाशित विचारों से सम्पादक-मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। विवाद की स्थिति में न्यायालय क्षेत्र उज्जैन रहेंगा।

## अपनी बात

मध्य युग में चौदहवीं से लेकर सोलहवीं सदी तक धर्म, ज्ञान और भक्ति की गंगा प्रवाहित हुई जिसमें भारतीय समाज अपने पाप—पुण्य धोता रहा।

संत रविदास ने—‘रविदास कुकरम करन तै नीच ऊँच हव जाय। करइ कुकरम जो ऊँच भी महानीच कहलाय।’ कहकर व्यक्ति की श्रेष्ठता और सामाजिक प्रतिष्ठा का आधार सत्कर्मों को ही माना तथा जातिवाद की व्यर्थता सिद्ध करते हुए ‘हरिभक्ति’ को वरेण्य निरुपित किया। जाति—पाँति पूछै नहिं कोय। हरि को भजै सो हरि का होइ।

दलित समाज में जन्में हमारे संत गृहस्थ एवं श्रमजीवी होकर जीविकोपार्जन करते थे। हाथों से काम करना और मुख से प्रभु का सुमिरन करते रहने वाले संत ने ‘कर्म ही उपासना है’ का संदेश दिया है—

‘रविदास मानुष धरम है, करम करहि दिन—रात।  
करमन ही फल पावना, नहिं काहू के हाथ।’

संत कवि रविदास ने अपने उपदेशों से दलितों की हीन भावना का उपचार करके उनमें आत्म विश्वास और आत्म सम्मान का भाव जगाया तथा उन्हें सम्मानपूर्वक जीने की शक्ति और प्रेरणा देकर समाज में सदभाव, एकता और भ्रातृभाव स्थापित करने का स्तुत्य प्रयास किया। व्यक्ति की सत्ता नश्वर है, उससे जुड़े संबंध नश्वर है, किंतु समष्टि अमर है क्योंकि जगत्सृष्टा सब में समस्त प्राणियों में ज्योति स्वरूप आत्म तत्व के रूप में विद्यमान है—

‘रविदास कर्ता सृष्टि का, वह तो कर्ता एक।  
सभ में जोत सरूप इक, काहै कहूँ अनेक।’

तभी तो संत इस मिथ्या भौतिक जगत से निर्लिप्त रहकर सत्य, आध्यात्मिक जगत से जुड़ जाते हैं और बिना किसी प्रकार के भेदभाव सभी की भलाई में लगे रहते हैं—

‘सन्तन के मन होत है, सबके हित की बात।  
घर—घर देखें अलख को, पूछै जात न पाँत।’

संत गुरु रविदासजी का कहना था कि बड़े पुण्य कर्मों के बाद यह दुर्लभ मनुष्य जीवन प्राप्त हुआ है। इसे विकारों में

फंसाकर व्यर्थ गंवाने की जगह प्रभु स्मरण में लगाना चाहिए—

दुलभ जनमु पुनः फल पाइओ,  
विरथा जात अविवेकै।  
राजे इन्द्र समसरि ग्रिह आसन,  
बिनु हरि भगति कहहु किह लेखै ॥

संत गुरु रविदासजी की भक्ति भाव से प्रभावित होकर कितने ही उनके शिष्य/शिष्या बन गये। इनमें चित्तौड़ की महारानी झालीबाई और उनकी पुत्र वधु महारानी मीराबाई प्रमुख हैं।

तथागत बुद्ध के बाद यह दूसरी सामाजिक क्रान्ति थी जिसने मनुस्मृति, ब्राह्मणवाद, वर्ण व्यवस्था को नकार कर मानवीय समता का मार्ग प्रशस्त किया। उनकी भक्ति में सराबोर महारानी मीराबाई तो खुले आम गाती फिरती थी—

‘मीरा ने गोविंद मिल्या जी, गुरु मिल्या रैदास।  
रैदास संत मिलै मोहि सतगुर, दीन्ही सुरत सहदानी ॥

मेरो मन लागो गुरु सो, अब न रहूँगी अटकी।

गुरु मिल्या रैदासजी, दीन्हीं ज्ञान की गुटकी ॥

उन्होंने लोकतांत्रिक राज्य की परिकल्पना ‘बेगमपुरा’ के रूप में की है जहाँ कोई गम—दुःख नहीं हो—

‘बेगमपुरा शहर को नाऊ ।

दुखु अंदोहु नहीं तिहि ठाऊ ॥

ना तसवीस खिराजु न मालु ।

खउफ न खता न तस्सु जमालु ॥

इस बेगमपुरा शहर में न तो दुख है, नहीं चिंता, क्योंकि यहाँ कोई किसी के अधीन नहीं। ऐसे समतावादी राज्य के साथ ही लोकतांत्रिक राज्य के संबंध में अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा है

‘ऐसा चाहुं राज मैं, जहाँ मिलै सभन को अन्न।  
छोट बड़ो सब सम बसै, रैदास रहे प्रसन्न ॥’

ऐसे संत गुरु को उनके 645वें जन्मोत्सव पर शत—शत नमन।

— डॉ. तारा परमार

# ग्रामसभा में गणपूर्ति की समस्या : एक अध्ययन

(राजस्थान राज्य के बाड़मेर जिले के विशेष सन्दर्भ में)

- मांगीलाल (शोधार्थी)

**सारांश :-** लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया में पंचायतीराज व्यवस्था की भूमिका महत्वपूर्ण है, क्योंकि भारत में पंचायती राज व्यवस्था सदियों से चली आ रही है। इस व्यवस्था में ग्राम या छोटे कस्बे के स्तर पर ग्राम पंचायत या ग्राम सभा होती है जो भारत की स्थानीय सरकार का प्रमुख अवयव है। गांव का सरपंच ग्रामसभा के द्वारा चुना हुआ सर्वोच्च प्रतिनिधि होता है। पुरातन काल से ही भारतवर्ष के ग्रामीण क्षेत्र के सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक जीवन में ग्राम सभा या ग्राम पंचायत का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। सार्वजनिक जीवन का प्रत्येक पहलू इसी के द्वारा संचालित होता था। ग्राम सभा पंचायती राज व्यवस्था का प्राथमिक व स्थाई निकाय है। जो गांव की संसद के रूप में कार्य करती है। स्वतंत्रता के पश्चात ग्राम सभा को कोई खास महत्व नहीं दिया गया। 73वें संविधान संशोधन अधिनियम 1992 में पंचायती राज व्यवस्था को संवैधानिकता का दर्जा मिला और ग्रामसभा एक संवैधानिक संस्था बनी। उसके पश्चात भी ग्रामसभा की स्थिति मजबूत नहीं हुई। विशेषकर राजस्थान के बाड़मेर जैसे पिछड़े जिले के गांवों की ग्राम सभाएं संवैधानिक संस्थाएं होते हुए भी व्यवहार में उनकी बैठकों में गणपूर्ति भी पूरी नहीं हो पाती। प्रस्तुत अध्ययन बाड़मेर जिले के गांवों की ग्रामसभाओं की गणपूर्ति में आने वाली समस्याओं पर आधारित है। समय एवं परिस्थितियों के अनुसार विषय के महत्व को समझते हुए इस पर निरंतर अध्ययन करना अंत्यत आवश्यक है।

**मूल शब्द :-** लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण, पंचायतीराज व्यवस्था, ग्रामसभा, गणपूर्ति, राजनीतिक सहभागिता एवं राजनीतिक

जागरूकता।

**प्रस्तावना :-** भारतीय लोकतांत्रिक संरचना में शासन के सबसे निचले व तीसरे पायदान पर विद्यमान पंचायतीराज व्यवस्था हमारे लोकतंत्र की आधारशिला है। भारत गांवों का देश है, क्योंकि इसकी तीन—चौथाई जनसंख्या गांवों में निवास करती है। प्राचीन काल से ही यहां गांव सशक्त रहे हैं। गांवों को स्वायत्तता प्रारंभ से ही मिली है। यहां की पंचायतीराज व्यवस्था ग्रामीण विकास का आधारस्तम्भ है। अतः पंचायतीराज व्यवस्था में लोकतंत्र की आत्मा निहित है। भारत में पंचायतीराज की अवधारणा लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण की अवधारणा पर आधारित है जिसका अभिप्राय यह है कि स्थानीय स्तर की आवश्यकताओं को जानकर स्वयं जनता द्वारा ही अपने स्वहित के लिए योजनाएं बनाना, पहल करना, स्वतंत्रापूर्वक उसको कियान्वित करना तथा जनप्रतिनिधियों के माध्यम से राजनीति व प्रशासन में अपनी सहभागिता देना है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी ने 'ग्राम स्वराज' का जो सपना देखा था उनमें पंचायती राज व्यवस्था को ग्रामीण भारत के शासन के सर्वोत्तम तरीकों में से एक माना जाता है। पंचायती राज संस्थाएं ग्रामीण क्षेत्रों की बुनियादी आवश्यकताओं की सुविधाएं प्रदान करने, समाज को सशक्त बनाने और ग्रामीण भारत के निम्न स्तर पर विकास प्रक्रिया को शुरू करने के लिए इसे स्थानीय सरकार अथवा स्थानीय स्व-सरकार माना जाता है।

**पंचायती राज व्यवस्था की स्थापना :-** भारत में पंचायतें सदियों से चली आ रही हैं। स्वतंत्रता के पश्चात पंचायती राज व्यवस्था की स्थापना करने वाला राजस्थान भारत का पहला राज्य है। जहां सर्वप्रथम 02 अक्टूबर 1959 को प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू

જી ને રાજસ્થાન કે નાગૌર જિલો કે બગદરી ગાંવ મેં પંચાયતી રાજ વ્યવસ્થા લાગુ કી। ઉસકે પશ્ચાત પંચાયતી રાજ વ્યવસ્થા કો સંવૈધાનિકતા કા દર્જા દેને કે લિએ ભારતીય સંસદ ને 73વાં સંવિધાન સંશોધન અધિનિયમ 1992 પારિત કિયા જો 24 અપ્રૈલ 1993 સે સંપૂર્ણ ભારત મેં વિધિવત્ રૂપ સે લાગુ હું। ઇસી દિન 24 અપ્રૈલ કો ભારત મેં રાષ્ટ્રીય પંચાયતી રાજ દિવસ કે રૂપ મેં મનાયા જાતા હૈ। આજ સ્વતંત્રતા, સમાનતા, ન્યાય એવં બંધુત્વ કી વિચારધારા કો સમેટે હુએ પંચાયતી રાજ વ્યવસ્થા ભારતીય સંવિધાન કે ભાગ 9 (અનુચ્છેદ 243 સે 243એ તક) એક સંવૈધાનિક નિકાય કે રૂપ મેં કિયાચિત હૈ। ગ્રામસભા પંચાયતી રાજ વ્યવસ્થા કા પ્રાથમિક વ સ્થાઈ નિકાય હૈ જિસે ગાંવ કી સંસદ કે રૂપ મેં જાના જાતા હૈ।

**ગ્રામસભા કા ગરન્ન :**— ગ્રામસભા એક સંવૈધાનિક સંસ્થા હૈ। જિસસે ભારતીય સંવિધાન કે અનુચ્છેદ 243(A) મેં ઇસે પરિભાષિત કિયા ગયા હૈ। ઇસમેં કહા ગયા હૈ કી પ્રત્યેક ગ્રામ પંચાયત ક્ષેત્ર કે લિએ એક ગ્રામસભા હોગી, જિસમેં ઐસે સભી લોગ સમ્મિલિત હોંગે જિનકે નામ પંચાયત કી નિર્વાચન સૂચી મેં ગ્રામ સ્તર પર શામિલ રહતે હૈ। ગ્રામસભા કે સદસ્ય ઉસ પંચાયત સર્કિલ કે અંતર્ગત આને વાલે ગાંવ યા ગાંવો સે સંબંધિત મતદાતા સૂચી મેં સૂચીબદ્ધ વ્યક્તિ હોતે હું। ગ્રામસભા પંચાયતી રાજ વ્યવસ્થા કા પ્રાથમિક નિકાય હૈ ઔર સબસે બડા નિકાય ભી। યહ એક સ્થાઈ નિકાય હૈ। પંચાયતી રાજ કી અન્ય સભી સંસ્થાએ જૈસે કી ગ્રામ પંચાયત, પંચાયત સમિતિ ઔર જિલા પરિષદ કા નિર્માણ નિર્વાચિત પ્રતિનિધિયોં દ્વારા હોતા હૈ। જબકિ ગ્રામસભા એક પંચાયત સર્કિલ મેં આને વાલે ગાંવ અથવા ગાવોં કે મતદાતાઓં સે મિલકર બનતી હૈ। ગ્રામસભા દ્વારા લિએ ગાં નિર્ણય કિસી અન્ય નિકાય દ્વારા રહ્ય નહીં કિએ જા સકતે। ગ્રામ સભા કે નિર્ણયોં કો નિરસ્ત કરને કા અધિકાર કેવળ ગ્રામ સભા મેં હી નિહિત હોતા હૈ ઇસલિએ ગ્રામસભા કો 'ગાંવ કી સંસદ' કહા જાતા હૈ। ગ્રામસભા અપને ક્ષેત્ર કે સર્વાર્ગીણ

વિકાસ હેતુ યોજના બનાને, બજટ બનાને તથા વિકાસ કાર્યોં પર નિગરાની રખને કે લિએ ઉત્તરદાયી હૈ। સરપંચ કા અનુમોદન મિલને કે બાદ પંચાયત સચિવ કો ગ્રામ સભા કા ગઠન કરના ચાહિએ। ગ્રામ સભા કે 10 પ્રતિશત સદસ્યોં દ્વારા યા ગ્રામ સભા કે 50 વ્યક્તિયોં દ્વારા (દોનોં મેં સે જો ભી અધિક હો) ગ્રામ સભા કે આયોજન હેતુ અનુરોધ કિએ જાને પર ગ્રામ પંચાયત કા સરપંચ ગ્રામસભા કી બૈઠક બુલાતા હૈ। યદ્યપિ ઉન સદસ્યોં કો બૈઠક કે ઉદ્દેશ્ય કી જાનકારી દેની હોતી હૈ। બૈઠક કે લિએ, બૈઠક કી તારીખ સે 5 દિન પહલે કાર્ય અવધિ કે દૌરાન સરપંચ કે પાસ એક લિખિત પ્રસ્તાવ સૌંપના પડેલું હૈ। જિસ તારીખ કે લિએ અનુરોધ કિયા ગયા હૈ। સરપંચ ગ્રામ સભા કે બૈઠક કી અધ્યક્ષતા કરતા હૈ। યદિ ઉસ તારીખ કો સરપંચ બૈઠક આયોજિત કરાને મેં વિફલ રહતા હૈ તો બૈઠક કે લિએ અનુરોધ કરને વાલે સદસ્ય ખુદ હી ગ્રામ સભા કી બૈઠક આયોજિત કર સકતે હૈ ઔર ઉપરિથિત સદસ્યોં મેં સે વરિષ્ઠતા કે આધાર પર અથવા સર્વસમ્મતિ સે ઉપરિથિત ગ્રામસભા કા કોઈ ભી સદસ્ય ઇસ બૈઠક કી અધ્યક્ષતા કર સકતા હૈ।

**ગ્રામસભા કે સદસ્ય :**— ગ્રામસભા કે સદસ્ય ઉસી ગાંવ યા ઉસ ગ્રામ પંચાયત મેં આને વાલે લોગ હોતે હું જિનકી આયુ 18 વર્ષ સે ઊપર હૈ તથા જિન્હોને અપના નામ ઉસ ગ્રામ પંચાયત કી મતદાતા સૂચી મેં જુડ્ગા લિયા હૈ। 18 વર્ષ સે કમ ઊપર કે લોગ ગ્રામ સભા કે સદસ્ય નહીં બન સકતે। ઐસે લોગ જિનકી ઉત્ત્ર 18 સાલ હો ઔર વે ગાંવ મેં રહતે હોં લેકિન ગ્રામ પંચાયત કે મતદાતા સૂચી મેં પંજીકૃત મતદાતા નહીં હૈ તો વે ભી ગ્રામસભા કે સદસ્ય નહીં હો સકતે।

**ગ્રામસભા કી બૈઠક :**— ભારત કે સભી રાજ્યોં મેં સામાન્યતા: ગ્રામ સભા કી એક વર્ષ મેં દો બૈઠકે હોતી હું। રાજસ્થાન પંચાયતી રાજ અધિનિયમ 1994 મેં યહ પ્રાવધાન કિયા ગયા હૈ કી પ્રત્યેક વર્ષ ગ્રામસભા કી કમ સે કમ દો બૈઠકે હોગી। પહલે વિત્તીય વર્ષ કે પ્રથમ

તૈમાસ મેં ઔર દૂસરી અંતિમ તૈમાસ મેં। લેકિન સન 2003 મેં રાજસ્થાન સરકાર ને ઇસમેં સંશોધન કરતે હુએ યહ નિર્ધારિત કિયા કિ અબ ગ્રામ સભા કી બૈઠક વર્ષ મેં ચાર બાર આયોજિત કી જાએગી। ઇસ હેતુ સરકાર ને નિન્મલિખિત તિથિયાં નિર્ધારિત કી હૈ।

1. પ્રથમ બૈઠક – ગણતંત્ર દિવસ પર 26 જનવરી કો
2. દ્વિતીય બૈઠક – મજદૂર દિવસ પર 01 મર્ચ કો
3. તૃતીય બૈઠક – સ્વતંત્રતા દિવસ પર 15 અગસ્ત કો
4. ચતુર્થ બૈઠક – ગાંધી જયંતી પર 02 અક્ટૂબર કો

રાજસ્થાન પંચાયતી રાજ અધિનિયમ મેં યહ ભી પ્રાવધાન હૈ કિ ગ્રામસભા કી બૈઠક ગ્રામ પંચાયત કે સરપંચ કે દ્વારા યા ઉસકી અનુપરિસ્થિતિ મેં ઉપસરપંચ કે દ્વારા બુલાઈ જાતી હૈ ઔર બૈઠક કી અધ્યક્ષતા ભી સરપંચ કે દ્વારા યા ઉસકી અનુપરિસ્થિતિ મેં ઉપસરપંચ કે દ્વારા કી જાતી હૈ। તથા સરપંચ વ ઉપસરપંચ દોનોં કી અનુપરિસ્થિતિ હોને કી દશા મેં ગ્રામસભા કી બૈઠક કી અધ્યક્ષતા બૈઠક મેં ઉપરિસ્થિત સદસ્યોં કે બહુમત સે ઇસ પ્રયોજન કે લિએ નિર્વાચિત કિએ ગએ ગ્રામસભા કે કિસી સદસ્ય દ્વારા કી જા સકતી હૈ તથા સંબંધિત પંચાયત સમિતિ કા વિકાસ અધિકારી યા ઉસકે દ્વારા નામ નિર્દેશિત કોઈ અધિકારી ગ્રામ સભા કી સાથી બૈઠકોં મેં ઉપરિસ્થિત હોતા હૈ। ગ્રામ સભા કી બૈઠક ગ્રામ પંચાયત ક્ષેત્ર મેં ઐસે સ્થાન પર કિયા જાના ચાહિએ જહાં પર સભી સદસ્યોં કે બૈઠને કે લિએ સુવિધા હો। ગ્રામ પંચાયત મેં અનેક ગાંવ હોને કી સ્થિતિ મેં ગ્રામ સભા કા સંચાલન એક કે બાદ એક સભી ગાંવો મેં રોટેશન કે આધાર પર કિયા જાના ચાહિએ। ગ્રામ સભા કા આયોજન દિન કે સમય કિસી ભી સમય, યાની સૂર્યોદય કે બાદ ઔર સૂર્યાસ્ત સે પહલે કિયા જા સકતા હૈ।

**ગ્રામસભા મેં ગણપૂર્તિ :**— ગણપૂર્તિ સે અભિપ્રાય હોતા હૈ કિ કિસી વૈધાનિક બૈઠક કે લિએ ઉપરિસ્થિત ન્યૂનતમ સદસ્ય સંખ્યા અથવા કોરમ। રાજસ્થાન સરકાર દ્વારા ગ્રામસભા કી બૈઠકોં હેતુ ન્યૂનતમ ગણપૂર્તિ

(કોરમ) ગ્રામ પંચાયત કે કુલ મતદાતાઓં કે દસવેં ભાગ કે બરાબર રહ્યી ગઈ હૈની। જિસમેં સે અનુસૂચિત જાતિ, અનુસૂચિત જનજાતિ, પિછડા વર્ગ કે સદસ્ય ઔર મહિલા સદસ્યોં કે ઉપરિસ્થિત ઉનકી જનસંખ્યા કે અનુપાત મેં હોગી। ગણપૂર્તિ પૂરી નહીં હોને પર ગ્રામ સભા કી બૈઠક કા નિર્ણય માન્ય નહીં હોગ અર્થાત ગ્રામ સભા બૈઠક મેં ગણપૂર્તિ કા પૂરા હોના હર હાલ મેં અનિવાર્ય હોતા હૈ।

**ગ્રામસભા મેં ગણપૂર્તિ કી સમસ્યા :**— રાજસ્થાન મેં ગ્રામસભા કી કિસી બૈઠક કે લિએ ગણપૂર્તિ ઉસ ગ્રામ પંચાયત કે પંજીકૃત સદસ્યોં કા દસવાં ભાગ હોતી હૈની લેકિન પ્રદેશભર મેં વિશેષકર બાડ્ઝેમેર જૈસે જિલે મેં સ્થિતિ યહ હૈ કિ ગ્રામસભા કી બૈઠક મેં રાજનીતિક જાગરૂકતા કે અભાવ મેં કુલ મતદાતાઓં કે 2 સે 5 પ્રતિશત મતદાતા ભી ગ્રામસભા કી બૈઠક મેં નહીં આ પાતે હૈ તથા વૈધાનિક બાધ્યતાઓં કે ચલતે યા તો ગ્રામસભા મેં ગણપૂર્તિ કે અભાવ મેં હી નિર્ણય કર લિએ જાતે હૈની યા ફર્જી હસ્તાક્ષર અથવા અંગૂઠે કે નિશાન રજિસ્ટર મેં લગાકર કાગજી કાર્યવાહી પૂરી કર લી જાતી હૈ। અગર કભી—કભાર ગ્રામસભા મેં 300—400 વ્યકિત આ ભી જાતે હૈની તો અત્યધિક શોર—શરાબે, આરોપ—પ્રત્યારોપેં તથા લડ્ડાઈ—ઝાગડેં શુરૂ હો જાતે હૈ જિસકે કારણ બૈઠક કો બીચ મેં હી સ્થળિત કરના પડ્ઢતા હૈ। ગ્રામસભા મેં ન્યૂન ઉપરિસ્થિતિ કે અનેક કારણ હૈની | જિન પર દેશ ભર મેં ચર્ચા હોતી રહતી હૈ કિન્તુ યાં ઉન વ્યવહારિક કારણોં કા ખુલાસા કિયા જા રહા હૈ, જિસકી વજહ સે ગ્રામસભા મેં સદસ્ય ઉપરિસ્થિતિ અધિક નહીં હો પાતી હૈ।

ગ્રામસભા કી ગણપૂર્તિ મેં આને વાલી સમસ્યાએં એવાં ગ્રામસભા મેં ન્યૂન ઉપરિસ્થિતિ કો હમ નિન્મલિખિત કારણોં કે અન્તર્ગત સ્પષ્ટ કર સકતે હૈ।

**1. સદસ્યોં કી ઉદાસીનતા :**— રાજસ્થાન મેં ગ્રામસભા કી બૈઠક એક વર્ષ મેં ચાર બાર 26 જનવરી, 01 મર્ચ, 15 અગસ્ત ઔર 02 અક્ટૂબર કો આયોજિત કી જાતી હૈ। ઇસસે પૂર્વ સંબંધિત ગાંવ કી વાર્ડ સભાઓં કા

ભી આયોજન કિયા જાતા હૈ ઔર વાર્ડ સભા કા યહ પ્રાવધાન રાજસ્થાન મેં સન 2000 સે કિયા ગયા હૈ। ઇસકે પીછે મૂલ કારણ યહ રહા હું કે એક ગ્રામ પંચાયત મેં કર્ઝ બાર 5–7 છોટે ગાંવ અથવા ઢાળિયાં સમીક્ષિત હોતે હૈ તથા પ્રત્યેક વાર્ડ કા સમુચ્છિત તથા સમાન વિકાસ નહીં હો પાતા હૈ તથા ઉસ ગ્રામ પંચાયત કે સભી મતદાતા એક–દૂસરે કો ભલીભાંતિ જાનતે ભી નહીં હૈ ઔર અધિકાંશ સદસ્યોં કી ઉદાસીનતા કે કારણ વાર્ડ સભા કે માધ્યમ સે સંબંધિત ઢાળી યા વાર્ડ કે સદસ્ય અપની આવશ્યકતાઓં તથા સમસ્યાઓં કી પહ્યાન કરકે વિકાસ કાર્ય પ્રસ્તાવિત કર દેતે હું જિન્હેં ગ્રામ સભા કી બૈઠક મેં રખ દિયા જાતા હૈ।

**2. મહિલાઓં કી ભાગીદારી ન્યૂન હોના :**— એક ગ્રામસભા કી લગભગ આધી સદસ્ય મહિલા વર્ગ હોતી હું હૈનું। રાજસ્થાન કે ગ્રામીણ ક્ષેત્રોં મેં પુરુષ પ્રધાન સંસ્કૃતિ કે ચલતે મહિલાઓં કો કેવલ ઘુંઘટ અથવા ઘર કી ચારદીવારી મેં રખા જાતા હૈ। બાડ્ઝેર જિલે કે અધિકાંશ ગ્રામીણ ક્ષેત્ર મેં અભી ભી કુછ પરિવાર અપની મહિલાઓં કો ગ્રામ સભા કી બૈઠક મેં જાને કી સ્વીકૃતિ નહીં દેતે ક્યાંકિ વે મહિલાઓં કા સ્થાન ઘર મેં સમજાતે હું પંચાયત મેં નહીં। પારંપરિક પરિવાર મહિલાઓં કી સ્વતંત્રતા કો ઉચિત નહીં સમજાતે હૈ ઇસલિએ મહિલાએ ગ્રામ સભા કી બૈઠક મેં નહીં આ પાતી હૈ અગર કુછ આ ભી જાતી હૈ તો ઉનકી સંખ્યા અત્યધિક ન્યૂન હોતી હું। બાડ્ઝેર જિલે કી અધિકાંશ ગ્રામ સભાઓં મેં કેવલ પુરુષ વર્ગ હી આતે હૈ ઔર યહ લોગ હી પ્રતિનિધિ કે રૂપ મેં મહિલાઓં કા સારા કાર્ય કરતે હૈ।

**3. શિક્ષા કા અભાવ :**— અશિક્ષા સભી સમસ્યાઓં કી બુનિયાદ હૈ। શિક્ષા કે અભાવ મેં કિસી ભી વ્યક્તિ કા સર્વાંગીણ વિકાસ સંભવ નહીં હો પાતા હૈ। રાજસ્થાન કા બાડ્ઝેર જિલા શિક્ષા કી દૃષ્ટિ સે અત્યંત પિછડા હોતું હૈ। સાક્ષરતા કી દૃષ્ટિ સે બાડ્ઝેર રાજસ્થાન મેં 29વેં નંબર પર આતા હૈ ઔર 2011 કી જનગણના કે અનુસાર બાડ્ઝેર

જિલે કી સાક્ષરતા દર માત્ર 56.50 પ્રતિશત હી હૈ। ઇસલિએ બાડ્ઝેર જિલે મેં શિક્ષા કા સમુચ્છિત પ્રચાર નહીં હોતું હૈ। યહાં કે ગ્રામીણ ક્ષેત્રોં કે લોગોં કો ગ્રામ સભા કી બૈઠક કે બારે મેં પૂર્ણ જાનકારી હો હી નહીં પાતી જિસકે પરિણામસ્વરૂપ અધિકાંશ અશિક્ષિત સદસ્ય ગ્રામ સભા કી બૈઠક મેં નહીં આ પાતે।

**4. રાજનીતિક જાગરૂકતા કા અભાવ :**— લોકતંત્ર કી શુરૂઆત ગ્રામસભા સે હી હોતી હૈ। બાડ્ઝેર જિલે કે ગ્રામીણ જન મેં ગ્રામસભા કે પ્રતિ જનચેતના એવં જાગરૂકતા કા અભાવ હૈ જિસસે ગ્રામીણ વિકાસ મેં જન સામાન્ય કી સહભાગિતા એવં સહયોગી ભૂમિકા પ્રાપ્ત નહીં હો પા રહી હૈ। રાજનીતિક જાગરૂકતા કે અભાવ મેં ગ્રામીણ લોગ ગ્રામ સભા કી બૈઠક મેં શામિલ હોને કી કોઈ ખાસ રૂચિ નહીં રખ પાતે। હાલાંકિ ગ્રામસભા કી પહલી બૈઠક મેં કિંચિત ઉત્સાહ દિખાઈ દેતા હૈ પરંતુ કાલાંતર મેં મતદાતાઓં કી શિકાયતે બઢૃતી જાતી હૈ તથા ગ્રામસભા મેં ઉપસ્થિતિ તુલનાત્મક રૂપ સે ઔર કમ હો જાતી હૈ ઔર લોગોં મેં ગ્રામ સભા કે પ્રતિ વિકર્ષણ, શક્તિહીનતા ઔર રાજનીતિક નેતૃત્વ સે વિશ્વાસ ઉઠને લગા હૈ।

**5. નિર્ધનતા એવં બેરોજગારી :**— રાજસ્થાન કે ગ્રામીણ સમાજ મેં નિર્ધનતા એવં બેરોજગારી વ્યાપક સ્તર પર ફૈલી હુઈ હૈનું। બાડ્ઝેર જિલે કે પ્રત્યેક ગાંવ મેં ઐસે કર્ઝ વ્યક્તિ હું જો દૈનિક મજદૂરી કે આધાર પર જીવન યાપન કરતે હું જો સુબહ હોતે હી શહર મેં અથવા નજદીક કે કાર્યસ્થળ પર જાના અધિક શ્રેયસ્કર સમજાતે હું। જિસમેં પશુ ચરાને વાલે, ટ્રક, ટ્રેક્ટર, કાર ચલાને વાલે, દૂધ બેચને વાલે, ફલ બેચને વાલે, દુકાનદારી કરને વાલે, નિઝી ઉદ્યોગ–ધંધોં વ ઉપકરમોં મેં કામ કરને વાલે, રોગોપચાર કરાને વાલે, કૃષિ કાર્ય કરાને વાલે, સરકારી કાર્યો હેતુ ગાંવ સે બાહર જાને વાલે એવં દૈનિક મજદૂરી કરને વાલે લોગ આદિ સુબહ હોતે હી ગાંવ છોડ દેતે હૈ તથા શામ તક વાપસ લૌટતે હું। ઘર

કી મહિલાએ ઘર કા કામ કાજ કરને મેં ઔર શેષ સમય મેં ઘર પર કોઈ વ્યવસાય કરને મેં ઇતની વ્યસ્ત રહતી હું કી ઘર કા કોઈ ભી સદસ્ય ગ્રામ સભા મેં નહીં આ પાતા હૈ।

**6. જાતિગત ભેદભાવ** :— ભારતીય સંવિધાન કે અનુચ્છેદ 17 મેં અસ્પૃશ્યતા, છુआછૂત, ભેદભાવ, આદિ કો સમાપ્ત કિયા ગયા હૈ પરંતુ બાડ્ઝેર જૈસે પિછે જિલે કે ગ્રામીણ ક્ષેત્રો મેં અભી ભી ગ્રામસભા કી બૈઠક મેં નિર્મન જાતિ કે લોગોં કે સાથ ભેદભાવ કિયા જાતા હૈ। કુછ ગાંબ મેં તો સ્થિતિ એસી હૈ કી અનુસૂચિત જાતિ એવં જનજાતિ કે લોગોં કો ગ્રામસભા અથવા સાર્વજનિક સભા મેં બોલને કા ભી અધિકાર નહીં દિયા જાતા હું તથા ઉનકો આમ બૈઠક વ્યવસ્થા સે અલગ બિઠાયા જાતા હૈ ઇસલિએ અનુસૂચિત જાતિ વ જનજાતિ કે લોગ ગ્રામસભા કી બૈઠક મેં આને સે કતરાતે હૈ।

**7. પ્રભુત્વશાલી લોગોં એવ દંબંગોં કા વર્ચસ્વ** :— બાડ્ઝેર જિલે કે કુછ ગાંબો મેં આજ ભી ગ્રામસભા મેં પ્રભુત્વશાલી લોગોં એવં દંબંગોં કા વર્ચસ્વ ચલતા હૈનું। ભારત કો પંચાયતીરાજ વ્યવસ્થા દેને વાલે રાજસ્થાન કે બાડ્ઝેર જૈસે કર્ઝ જિલોં મેં ગ્રામસભાએં ઠેકે પર ચલ રહી હૈનું। પંચાયતીરાજ સંસ્થાઓ મેં નિર્વાચિત હોને વાલે પંચ, સરપંચ વ ઉપસરપંચ ભી પ્રભુત્વશાલી લોગોં એવં દંબંગોં કે યાં ઘરોં વ ખેતોં મેં કામ કર રહે હું ઉનકી જગહ દંબંગ સરપંચી સંભાલ રહે હું। બાડ્ઝેર કે એક સમાચાર પત્ર કે અનુસાર બાડ્ઝેર જિલે કી 70 સે જ્યાદા ગ્રામ પંચાયતોં કા હાલ દેખા જાએ તો પંચાયતી રાજ કો શર્મસાર કરને વાલી બાતે સામને આતી હૈ ઔર આમ જનતા કી ગ્રામ સભા મેં ભાગીદારી ન કે બરાબર હૈ ઔર ઇન પ્રભુત્વશાલી લોગ એવં દંબંગોં કે દ્વારા જો નિર્ણય લિએ જાતે, વહીં ગ્રામસભા મેં પ્રસ્તાવ બનાકર પારિત કરવા લિએ જાતે હું। ઇસ સંદર્ભ મેં મહાન રાજનીતિજ્ઞ ચાણકય ને કહા કી — “જહાં કી જનતા લોભ—લાલચ વ નિંદ્રા મેં ડૂબીછોતી હું તથા ઉનમેં જાગરૂકતા કા અભાવ હો તો વહાં પર

કપટીયોં કા શાસન ચલતા હૈનું।”

**નિષ્કર્ષ** :— ભારતીય સંવિધાન કે 73વેં સંવિધાન સંશોધન અધિનિયમ 1992 કે અનુસાર ગ્રામસભા એક સંવૈધાનિક સંસ્થા હૈ। યાં સે ભારતીય લોકતંત્ર કી શુરુઆત હોતી હૈ। જિસ પ્રકાર કેન્દ્ર મેં સંસદ કાર્ય કરતી હું ઠીક વૈસે હી ગાંબ મેં ગ્રામસભા કાર્ય કરતી હૈ। ગ્રામસભા કી બૈઠક મેં સદસ્યોં કી સક્રિય ભાગીદારી પંચાયતીરાજ વ્યવસ્થા કો સુદૃઢ એવં ગ્રામીણ વિકાસ કો ગતિ પ્રદાન કરને મેં આવશ્યક હૈ। ઇસલિએ ગ્રામ સભા કે સભી સદસ્યોં કા ગ્રામ સભા કી બૈઠક મેં જાના ન કેવેલ ઉનકા અધિકાર હી હૈ બલ્લિક ઉનકા કર્તવ્ય ભી બનતા હૈ કી વો ગાંબ કે વિકાસ મેં અપની ભૂમિકા નિભાને કે લિએ ગ્રામસભા કી પ્રત્યેક બૈઠક મેં અપની ભાગીદારી નિભાએં ઔર ગ્રામસભા કે સદસ્યોં કો અપને અધિકાર ઔર કર્તવ્યોં કે પ્રતિ જાગરૂક રહના ચાહિએ। ગ્રામસભા પંચાયતીરાજ વ્યવસ્થા કી આત્મા હૈ ઔર આત્મા કી રક્ષા કરના પ્રત્યેક નાગરિક કી ધર્મ એવં કર્મ હોતા હૈ। ગ્રામ પંચાયત કે ચહુંમુખી વિકાસ એવં નિરંતર પ્રગતિ કે લિએ યાં નિતાંત આવશ્યક હૈ કી ગ્રામસભા મેં સદસ્યોં કી સક્રિય ભાગીદારી હો તભી મહાત્મા ગાંધીજી કે ગ્રામ સ્વરાજ કા સપના સાકાર હો સકેગા। જો કામ સ્થાનીય લોગોં ઔર ઉનકે નુમાઝદોં કે હાથોં મેં હી રહના ચાહિએ। ગ્રામસભા ક્યા કર રહી હૈ ? ઔર ક્યા કરને મેં નાકામ રહી હૈ ? આમ જનતા કો ઇસ સવાલ સે કહીં જ્યાદા સરોકાર હોના ચાહિએ, ક્યોંકિ ઇસ બાત કી સીધા અસર ઉસકી રોજમરા કી જિંદગી પર પડતા હૈ ઇસ તરહ ગ્રામસભા કો મજબૂત બનાના લોકતાંત્રિક પ્રક્રિયા કો મજબૂત બનાને કે સમાન હૈ।

(રાજનીતિ વિજ્ઞાન વિભાગ)  
જય નારાયણ વ્યાસ વિશ્વવિદ્યાલય, જોધપુર, રાજસ્થાન  
મો.ન. 8104824946

संदर्भ:-

- कुमावत, ललित, : पंचायतीराज एवं वंचित महिला समुह का उभरता नेतृत्व, कलासिकल पब्लिशिंग, नई दिल्ली, 2004, पृष्ठ संख्या 134
- महला, एच. एस., : राजस्थान में पंचायतीराज की वर्तमान स्थिति, समस्याएं एवं सुझाव, राजस्थान विकास, मार्च—अप्रैल 1999, पृष्ठ संख्या 37
- आर्य, विमला : पंचायतीराज में महिलाओं की भूमिका, राजस्थानी ग्रंथागार, सोजती गेट, जोधपुर, 2013, पृष्ठ संख्या 261
- मीणा, हरिमोहन, : पंचायतीराज संस्थानों और उनके विकास : राजस्थान के संदर्भ में शोध पत्रिका, सितम्बर 2018, पृष्ठ संख्या 11
- माहेश्वरी, एस. आर. : भारत में स्थानीय शासन, अग्रवाल पुस्तक प्रकाशन, आगरा, 2010, पृष्ठ संख्या 56
- सिंह, रणवीर : पंचायती राज संस्थाओं में महिला सशक्तिकरण : चुनौतियाँ एवं निवारण, पंचायतीराज अपडेट अप्रैल 2013 पृष्ठ संख्या 5
- कटारिया, सुरेन्द्र : पंचायती राज संस्थाएँ : अतीत, वर्तमान और भविष्य, नेशनल पब्लिकेशन्स हाउस, जयपुर, 2010, पृष्ठ संख्या 243–244
- राजस्थान पंचायतीराज वार्षिक प्रतिवेदन 2011 से 2021 तक।
- दिव्य पंचायत, राजस्थान पत्रिका, दैनिक नवज्योति एवं दैनिक भास्कर बाड़मेर।
- [www.barmer.rajasthan.gov.in](http://www.barmer.rajasthan.gov.in)
- [www.panchaytraj.gov.nic.in](http://www.panchaytraj.gov.nic.in)
- [www.rajpanchayt.rajasthan.gov.in](http://www.rajpanchayt.rajasthan.gov.in)

## बौद्ध विहार में नारी की स्थिति

- डॉ. मंजु यादव (रिसर्च फैलो)

अनेक प्राचीन ग्रन्थों में नारी की स्थिति में अनेक परिवर्तन देखने को मिलते हैं, उपनिषद और अरण्यक के युग में वेद पढ़ने और यज्ञ करने का अधिकार प्राप्त नहीं था मनुस्मृति में स्त्रियों के अधिकार एवं समाज में स्थिति के नियम बनाये गये। मनुस्मृति में षोडस संस्कारों में स्त्री के लिए एक मात्र विवाह संस्कार था।

गुरु आश्रम में विद्या अध्ययन की अनुमति नहीं थी यज्ञ—आदि में स्त्री का स्थान केवल पाकशाला तक ही

सीमित था बचपन से बुढ़ापे तक नारी स्वतंत्र नहीं मानी जाती थी। धर्म एवं शास्त्रों में नारी को गृह स्वामिनी और गृह में अर्थ—संग्रह तथा अर्थ—व्यय, पुण्य तथा धर्म—कर्म, भोजन एवं गृह के अन्य कार्यों तक ही सीमित था।

उपनिषद—काल में कई विदुषी नारियों का उल्लेख मिलता है। जिनमें गार्गी, वाचकनवी, घोषा, मैत्रेयी (याज्ञवल्लय की पत्नी) आदि महाभारत काल के बाद स्त्रियों की स्थिति में अनेकों परिवर्तन देखने को मिलते हैं। जिनमें स्त्रियों के अधिकार और कार्य क्षेत्र को केवल गृह की चार दीवारों तक ही सीमित कर दिया गया। इसके बाद बौद्ध—काल में नारियों के अधिकारों में कुछ अधिकारों की स्वतन्त्रता दिखाई देती है। घोर पर्दप्रथा तो नहीं थी नारियों के अधिकार के लिए न्यायालय जाने का अधिकार था। किन्तु सम्पत्ति में स्त्री को कोई अधिकार नहीं था।

भरहत, सॉची और बौध गया की वेष्टन—वेदिकाओं की दीवारों पर उत्कीर्ण मिलते हैं जिनका निर्माण मौर्यकाल के बाद हुआ था। जातक कथाओं में अनेक कहानियाँ और ऐतिहासिक घटनाएँ वर्णित हैं। जातक कथाओं में नारी के चरित्र को दोषपूर्ण दर्शाया गया है। यदि पति दुराचारी है और पत्नी दुर्व्यवहारी तो पति को छोड़कर भिक्षुणी बनकर गृह त्याग देती थी तब नारी के साथ अन्याय होता था। बौद्ध प्रजापति गौतमी के साथ कुल की 500 नारियाँ ऐसी थीं जिनके पति या तो भिक्षु हो गये थे या मर गये थे, वे भिक्षुणी बनी।

भगवान बुद्ध भी नारी—समाज के सम्बन्ध में बहुत—कुछ पुराने विचारों से ही सहमत थे। क्योंकि आनन्द के प्रयास से जब भिक्षुणी—संघ का निर्माण हुआ, तब भगवान बुद्ध ने कहा—आनन्द यदि स्त्रियाँ इस धर्म में नहीं आती, तो यह धर्म 1000 वर्ष तक ठहरता, परं चूंकि स्त्रियाँ भी आ गई हैं तो यह धर्म केवल 500 वर्ष ही जीवित रहेगा।

भगवान बुद्ध के समय काल में ही, बिहार—प्रदेश की नारियों ने बौद्ध धर्म के विकास में जो योगदान किया, वह अभूतपूर्व घटना है। बौद्ध भिक्षुणियों के संघ के पहले

ही जैन सम्प्रदाय में भिक्षुणियों का संघटन हो गया था। बौद्ध धर्म में सर्वप्रथम महाप्रजापति गौतमी ही 500 नारियों को लेकर भिक्षुणी हुई थी इसके बाद तो नारी—समाज में बौद्ध—भिक्षुणी होने की लहर सी उठ गई और भिक्षुणियों का एक बृहत संघटन ही हो गया। ये नारियाँ भी घूम—घूमकर धर्मोपदेश करने लगी और संघ में भिक्षुणियों को दीक्षित भी करने लगी। वे जहाँ भी जाती, भिक्षु—संघ के अलग उनके संघ का पड़ाव होता था। जगह—जगह भिक्षुणियों के लिए बिहार भी अलग बनाये जाते थे।<sup>1</sup>

इन भिक्षुणियों में से बिहार की कुछ विशेष नारियों का बौद्ध धर्म में क्या योगदान रहा—

**(1) वत्सा** :— वैशाली नगर की एक भिक्षुणी की चर्चा ‘थेरी गाथा’ में है। एक दिन यह भोजन के लिए साग पका रही थी कि कढ़ाही में ही साग जल गई। इस घटना से अन्दर के पट खुल गये। इन्होंने सोचा की अधिक देर तक आग पर रखने के कारण जिस तरह साग जल गई, उसी तरह ‘यदि अधिक समय तक समाधि और ध्यान का कर्म किया जाय, तो अन्तर के राग—द्वेष भी जल जायेंगे। पति ने इनकी मानसिक स्थिति को देखकर प्रव्रज्या लेने की आज्ञा दे दी। वत्सा महाप्रजापति गौतमी के साथ भगवान बुद्ध के पास जाकर दीक्षित हो गई। बुद्ध ने इनके सच्चे आन्तरिक वैराग्य की सराहना की।

**(2) धर्म दिन्ना** :— राजगृह—निवासी एक वैश्य सेठ की पुत्री थी। विशाख नाम के एक श्रेष्ठी—पुत्र से उसका विवाह हुआ था एक दिन विशाख अपने साथियों के साथ बुद्ध के उपदेश सुनने गया तो उन्हें वैराग्य हो गया। घर आकर अपनी पत्नी धर्म दिन्ना से कहा कि मेरा मन बुद्ध की ओर मुड गया है। तुम मेरा सारा धन लेकर अपने पिता के घर चली जाओ। तब धर्म दिन्ना ने पिता के घर जाने से इनकार कर दिया और कहा कि मैं भी आपका अनुगमन करूँगी। तब दोनों पति—पत्नी बुद्ध संघ में प्रवाहित हो गये। किन्तु धर्म चिन्तन में पत्नि ने बाजी मार ली और बौद्ध धर्म की परम पठिता हो गई।

बौद्ध धर्म का प्रचार करने वाली भिक्षुणियों में इनका स्थान प्रथम था।<sup>1</sup>

**(3) जयन्ति** :— यह एक लिच्छवि राजकुमारी थी इसने स्वयं बुद्ध के उपदेशों को सुनकर धर्म का ग्रहण किया था और इन्होंने बाद में अर्हत—पद भी प्राप्त किया। यह बुद्ध शासन से सप्तांगों की पूर्ण साधिका थी।

**(4) विशाखा** :— ये भद्रिया (भागलपुर के पास भद्रिया) नगर सेठ की पौत्री थी। जब विशाखा सात साल की बच्ची थी तभी भगवान बुद्ध इनके नगर में आये थे तब ये अपने दादा की आज्ञानुसार 500 कुमारियों और 500 दासियों के साथ भगवान बुद्ध का नगर से बाहर निकल अगवानी करके, स्वागत किया था। यह आगे जाकर बुद्ध संघ की सबसे बड़ी दायिका (दान देनेवाली) हुई। आगे चलकर यह भी बौद्ध भिक्षुणी हुई। यह नित्य पाँच सौ बौद्ध भिक्षुओं को भोजन कराकर स्वयं भोजन करती थी। अतः बौद्धों ने इनका नाम ‘शिगारमाता’ रख दिया, विशास्त्र ने श्रावस्ती में बौद्धधर्म के निवास के लिए ‘पूर्वराम’ नामक बिहार का निर्माण कराया था जो ‘शिगारमातुप्रासार’ के नाम से प्रसिद्ध हुआ था।

**(5) मैत्रिका** :— इन्होंने वृद्धावस्था के शक्तिहीन होने पर भी गृध्रकूट पर्वत पर जाकर अवधूत व्रत की साधना की। यह राजगृही के धनी ब्राह्मण की लड़की थी। यह बुद्ध शासन की तीनों विधाओं की पण्डिता हुई।

**(6) चित्रा** :— राजगृह के अत्यंत वैभवशाली गृहपति की कन्या थी। भगवान बुद्ध का उपदेश राजगृह नगर के द्वार पर सुना। तभी से बौद्ध धर्म की शरण में जाकर महाप्रजापति गौतमी से प्रवज्या ली। गृध्रकूट पर्वत पर साधना की और अर्हत् पद प्राप्त किया।

**(7) अमयमाता** :— उज्जैन की प्रसिद्ध रूपवती वैश्या थी बिम्बिसार की रखेल बनकर राजगृह में रह रही थी। इसका असली नाम पद्मावती था बिम्बिसार से एक पुत्र हुआ, जिसका नाम ‘अभय’ था बाद में अभय बौद्ध भिक्षु हो गया। अभय को अपनी माता के जीवन से अरुचि थी। अपने पुत्र की लांछन भरी बातों से पदमावती भी भिक्षुणी हो गई।

**(8) शुक्ला** :— ‘थेरी गाथा’ की 34 वीं भिक्षुणी थी। इन्होंने धर्मदिन्ना से बौद्ध धर्म की शिक्षा ली थी। यह बौद्ध संघ में उत्पन्न ओजस्वी भाषण करने वाली भिक्षुणी थी। इनके भाषण को सुनकर श्रोता मंत्रमुग्ध हो जाते थे। लोगों की धारणा थी कि इनके मधुर और ओज पूर्ण भाषण को वर्षा के निर्मल जल की तरह इसकी वाणी-रूपी जीवन सुधा को बुद्धिजीवी व्यक्ति प्यासे पथिकों की तरह पान करते थे।

**(9) रोहिणी** :— वैशाली को रहने वाली अत्यन्त धनाद्य ब्राह्मण की कन्या थी। एक दिन वैशाली में भगवान बुद्ध के धर्म उपदेश सुनने के पश्चात् मन में धर्म के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हुई। पिता ब्राह्मण होने के कारण बौद्ध धर्म का विरोध करता था उसके उपरान्त रोहिणी का हृदय परिवर्तन नहीं हुआ तब जाकर उसके पिता ने अपनी बेटी की निष्ठापूर्वक भक्ति भावना से प्रभावित हुआ तब अपनी पुत्री के साथ ही उसके पिता ने भी बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया।

**(10) आम्रपाली** :— आम्रपाली की कथा बहुत प्रसिद्ध है। इनका जन्म एक उच्चकुल में हुआ था परन्तु माता के अवैध सम्बन्ध से उत्पन्न होने के कारण इनका माता ने एक आम के बगीचे में फेंक दिया था। यह माली के द्वारा पाली गई आमवन में मिली थी इसके कारण इसका नाम आम्रपाली पड़ा था। अतः यह वैशाली की नगर-बधू का धर्म स्वीकार किया था। भगवान बुद्ध अन्तिम बार जब वैशाली गये तब इसी के बगीचे में ठहरे और इनके घर जाकर भोजन किया था उसके बाद ही इसने बौद्ध धर्म स्वीकार किया। उन्होंने अपनी ढलती उम्र में बौद्ध धर्म स्वीकार किया था इनके पुत्र आम्रपाली से पहले ही बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया था पुत्र के कारण बौद्ध धर्म श्रद्धा और बढ़ गयी थी।

इस प्रकार अनेकों बौद्ध भिक्षुणी हैं जिन्होंने बौद्ध धर्म को स्वीकार किया जिनमें दन्तिका, सोमा, भद्रा कापिलापनी, विमला, सिंहा, भद्रा कुषडल केशा, वासिष्ठी, क्षेमा, विजया चाला, उपचाला और शिशूपचाला तीनों बहने थीं इस प्रकार अनेकों भिक्षुणीओं ने बौद्ध धर्म को ग्रहण करने के साथ-साथ उनका प्रचार-प्रचार भी किया।

D-3/8-B धन्वन्तरी चिकित्सा केन्द्र,

कॉसमॉस मॉल के पीछे, नानाखेड़ा, उज्जैन (म.प्र.)

Mob. : 8349080117

### संदर्भ:-

- (1) अंगुतर निकाय – 7, 2 से उदत्त बुद्धचर्या के पृ. 527–28
- (2) दीर्घ निकाय 3, 10
- (3) संयुक्त निकाय, 9, 4, 8
- (4) बौद्ध धर्म – दर्शन (आर्याय-नरेन्द्रदेन) पृ. 176
- (5) विहार : एक ऐतिहासिक दिग्दर्शन—पृ. 163
- (6) बौद्धधर्म और विहार : बैदुनाथ पाण्डेय, पृ. 134–152

## बैचैन करता, ‘बैचैन’ का बचपन

— डॉ. उमा देवी

दलित आत्मकथाओं ने दलित चिंतन को एक नई दिशा दी है। ये आत्मकथाएँ दलित जीवन की त्रासदी, पीड़ा और संघर्ष का मार्मिक एवं यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करती हैं। ओमप्रकाश वाल्मीकि की ‘जूठन’, सूरजपाल चौहान की ‘तिरस्कृत’, मोहनदास नैमिशराय की ‘अपने-अपने पिंजरे’, कौशल्या बैसंत्री की ‘दोहरा अभिशाप’, सुशीला टाकभौरे की ‘शिकंजे का दर्द’, माता प्रसाद की ‘झोपड़ी से राजभवन’, तथा श्यौराज सिंह बैचैन की ‘मेरा बचपन मेरे कंधों पर’ आदि आत्मकथाएँ दलितपन का दंश, अमानवीय परम्पराओं, पूर्वग्रह से ग्रस्त समाज द्वारा किए जाने वाले अत्याचार, शोषण, उत्पीड़न तथा भूखमरी के इतिहास के लिखित दस्तावेज हैं, जो दलित समाज में सामाजिक चेतना और अस्मिताबोध जगाती हैं। साथ ही सर्वण समाज को आत्मावलोकन के लिए भी प्रेरित करती हैं। जिनकी खोखली श्रेष्ठता के आडंबर ने समाज के एक वर्ग को अछूत, निम्न करार देकर दूसरी दुनिया में जीने को मजबूर किया। श्यौराज सिंह बैचैन की आत्मकथा ‘मेरा बचपन मेरे कंधों पर’ में अभिव्यक्त ऐसी ही अनेक विसंगतियां, एक अस्पृश्य बालक की मजबूरियां, बाल-शोषण, संघर्ष तथा उसकी पीड़ा पाठकों को बैचैन कर देती हैं।

यह आत्मकथा समाज की अमानवीय प्रथाओं, शून्य

હોતી સંવેદનાઓં, રાક્ષસ સી નિગલતી ગરીબી, અભાવ તથા ભૂખમરી સે ત્રસ્ત દલિત બચ્ચોં કી સ્થિતિ કા માર્મિક ચિત્રણ કરતી હૈ। દલિત સ્તંભકાર ચંદ્રભાન પ્રસાદ લિખતે હું – “ડૉ. શ્યૌરાજ સિંહ બેચૈન કા યહ અનુભવ સ્વત્ત: હી દલિતોં કે વ્યાપક અનુભવોં સે જુડ્ધ ગયા હૈ। યહ દલિતોં કી સ્વાનુભૂતિ કા જીવંત ઇતિહાસ હૈ।”<sup>1</sup> બચપન મેં હી પિતા કે ગુજર જાને કે બાદ લેખક કા જીવન કી વાસ્તવિકતા સે સામના હોતા હૈ। એક ઓર અછૂતપન કે કારણ તિરસ્કાર તથા રોજગાર કે સાધન કા અભાવ તો દૂસરી ઓર બેસહારા આંસુ બહાતી મોં કા દુખ થા। પાંચ–છ સાલ કી ઉત્ત્ર સે હી દલિત એવં નિર્ધન હોને કી પીડા સે ઉનકા સાક્ષાત્કાર હોને લગા। સામાન્યત: બચ્ચોં કા બાલ્યકાલ માતા–પિતા કે કંધોં પર સવાર હોતા હૈ। લેખક કો યહ સૌભાગ્ય ન મિલા। અસમય પિતા કી મૃત્યુ ને અપના બચપન અપને કંધોં પર ઢોને કો વિવશ કર દિયા।

આલોચ્ય આત્મકથા લેખક કે પિતા કી મૃત્યુ સે ઉનકે દસવીં પાસ કરને તક કી કથા હૈ। ઇસ છોટી–સી આયુ મેં હી ઉન્હોને જીવન કો સર્વાધિક પીડા દાયક, અંસગત તથા અસહનીય અનુભવ પાએँ। આંસુઓ, સંઘર્ષો એવં દુખોં સે ઉનકા ગહરા સંબંધ સ્થાપિત હો ગયા। ઉનકી કહાની પઢ્યકર સહૃદય પાઠક વિચલિત હો ઉઠતા હૈ। એકતરફા સામાજિક વ્યવસ્થા કે તહુત દલિતોં પર હુએ અન્યાય કે પ્રતિ ઉસમે આક્રોશ ઔર ધિક્કાર કી ભાવના ઉત્પન્ન હોના સ્વાભાવિક હૈ। ‘મેરા બચપન મેરે કંધોં પર’ માત્ર લેખક કી કહાની ન હોકર ઉન લાખોં–કરોડોં આર્થિક, સામાજિક રૂપ સે ઉપેક્ષિત બચ્ચોં કી કથા હૈ જિન્હેં જિંદા રહને કી બુનિયાદી જરૂરતોં સે વંચિત રહ્યા ગયા હૈ। જો બાલશ્રમ, શોષણ કે આએ દિન શિકાર હોતે હું। યે પરિસ્થિતિયું સરકારોં કે બાલ–કલ્યાણ સંબંધી યોજનાઓં એવં નીતિયોં પર સવાલ ખડા કરતી હું। સંવિધાન કે સમતા, સ્વતન્ત્રતા કે અધિકાર પર પ્રશ્ન ચિન્હ લગાતી હું। પત્રકાર અમિત સેન

ગુપ્તા લિખતે હું – “આશા, હતાશા ઔર કરુણા ભરી હૈ ઉસકી આત્મકથા। યહ એક મહાકાવ્યક બચપન કા એકાલાપ હૈ, જિસમે બહુસંખ્ય આવાજે સંલિપ્ત હું।”<sup>2</sup>

ગરીબ હોના અભિશાપ સમાન હૈ। ઊપર સે અસ્પૃશ્ય ભી હો તો ઉપેક્ષા, તિરસ્કાર ઔર ઉચ્ચ વર્ગોં સે મિલી ઘૃણા ઉસે મનુષ્ય હોને કહ્યો દેતી હૈ? બાવજૂદ ઇન કંટીલી ઝાડિયોં રૂપી મુસીબતોં મેં શ્યૌરાજ ને અપને સપનોં કો દફન હોને નહીં દિયા। જીવન કી અનિશ્ચિતતાઓં તથા સુનિશ્ચિત ભવિષ્ય કી કોરી ગુંજાઇશ કે અંધેરી ગલિયોં મેં ગુમનામ જીવન જીના નહીં સ્વીકારા। દલિતોં કી આર્થિક તથા સામાજિક સ્થિતિ કે લિએ જિમ્મેદાર કારકોં, પરમ્પરાઓં એવં વ્યવસ્થા કે પ્રતિ ઉનમેં પીડા અવશ્ય થી, લેકિન ઉસે અપની નિયતિ નહીં બનને દિયા। ઉનમેં ગજબ કા આત્મવિશ્વાસ, દૃઢ નિશ્ચય ઔર લગન દેખી જા સકતી હૈ। મન મેં બાર–બાર પ્રશ્ન ઉઠતા કિ સભ્ય સમાજોં કે કાનૂન મેં તો કૈદિયોં, અપરાધિયોં કે લિયે ભી જીને લાયક રોટી કી વ્યવસ્થા કી જાતી હૈ, પર યહ્યો તો વહ ભી નહીં થી। ક્યા દલિતોં કો જીને કા ભી અધિકાર નહીં યા વે અપરાધિયોં સે ભી બદતર જીવ હું? ઇસકા ઉત્તર દે પાના સભ્ય સમાજ કે લિએ નામુમકિન હૈ। વે ક્રૂર, અમાનવીય સમાજ વ્યવસ્થા મેં ભૂખ, ગરીબી, અસ્પૃશ્યતા, ઉત્પીડન એવં અન્યાય સે મુક્તિ ચાહતે હું। ઇસકે લિએ વે પ્રયત્નશીલ હું। પરિસ્થિતિયોં સે હાર માનને વાલે નહીં। અપની સ્થિતિ સે તંગ આકાર ઉન્હોને કભી ગલત રાસ્તા નહીં ચુના। ઇસ દૃષ્ટિ સે ભી શ્યૌરાજ આજ કી અભાવોં સે ગ્રસ્ત ઉસ યુવા પીઢી કે લિએ પ્રેરણ હું, જો જીવન મેં કુછ પાને કે લિએ ગલત રાસ્તા અપના લેતે હું। ડૉ લલિતા કૌશલ લિખતી હું – “શ્યૌરાજ કી કથા કો ધ્યાન મેં રહ્યો તો દલિતોં કે બચ્ચોં કો બચપન જૈસા કુછ મિલતા હી નહીં, વે શોષણ કી ચક્કી મેં હોશ સંભાલતે હી જોત દિયે જાતે હું।”<sup>3</sup>

સંપત્તિહીનતા તથા સાધનહીનતા કી વિવશતા ને

लेखक की माँ को पुनर्विवाह के लिए मजबूर किया। एक पुरुष के आश्रय से उसे पति और उसके अनाथ बच्चों को पिता का सहारा मिलेगा, ऐसी आशा गलत साबित हुई। रामलाल और भिकारी दोनों के घर बच्चों को पिता नहीं मिला। भिकारी की क्रूरता की वह रोज शिकार होने लगी। मारपीट, गाली—गलौच आम बात थी। अशिक्षित, साधनहीन स्त्री कैसे पुरुषदंभ के तले कुचली जाती है, इसका लेखक ने अत्यंत मार्मिक वर्णन किया है। सौतेले पिता के घर श्यौराज के जीवन का रुख बदल गया। आज तक वे अनाथ होने की पीड़ा सह रहे थे। यहाँ सौतेले होने का ठप्पा भी लग गया। परिस्थितिवश बने दोनों सौतेले पिता आर्थिक रूप से कमजोर होने के कारण सौतेले बच्चों को पालने में असमर्थ थे। यहाँ लेखक और उनके भाई—बहनों को दोहरी मार झेलनी पड़ी। गाँव वाले उन्हें हीन दृष्टि से देखते, जिससे उनका दुख और गहरा हो जाता। इसी कारण उनके मित्र भी नहीं बन पायें। सभी बच्चे उनसे दूरी बनाकर रहते थे। लेखक का सौतेला होने में व्यक्तिगत गुनाह क्या था? यह परिस्थिति की देन थी। फिर समाज उन्हें हिकारत की दृष्टि से क्यों देखता था? इसका उत्तर आज तक उन्हें नहीं मिल पाया। बचपन अभावों से धिरा रहा। एक बच्चे को भूख की जो पीड़ा सहनी पड़ी वह हृदय विदारक है। माँ के साथ 'सिला' बीनकर कभी—कभार भूख मिट जाती थी। भूख की समस्या के हल के रूप में 'ढङ्गायन' जैसा जहर खाने की घटना मानवता को धिक्कारती है। कहने को तो भूख भी उन्हें रोज तिल—तिल कर मार रही थी, लेकिन 'ढङ्गायन' जैसा अखाद्य खाना क्षीण होती मानवीय संवेदनाओं एवं असंगत सामाजिक व्यवस्था की परिचायक है। जिस उम्र में बच्चे हजारों नखरें उठाकर अपना बचपन भोगते हैं, उस उम्र में लेखक सामाजिक अन्याय, लाचार माँ की विवशता तथा सौतेले पिताओं के भेदभाव को समझने की चेष्टा कर रहे थे। दूसरे बच्चों की तरह कभी उनकी

कोई जिद पूरी नहीं हुई, न कभी उनका जन्मदिन मनाया गया। सुबह खाते तो रातें खाली गुजर जाती और रात को कुछ मिल जाए तो सुबह भूखें पेट रहना पड़ता। अतः एक दिन माँ के आक्रोश ने भी लेखक को अहसास दिला दिया कि अब वे अनाथ हैं। उन्हें अपनी चिंता स्वयं करनी होगी — "सुन सौराज कान खोल के सुन। तेरो बाप मरि चुको है। वो तेरी सुनन कूं अब कबऊ लौटिकें नाँय आवैगो समझे। मैं तेरी कोई जिद पूरी नाँय कर पाऊँगी। अब तोई अपनी जिंदगी अपनी कमाई में गुजारनी है।"<sup>4</sup>

माँ की फटकार ने सीखा दिया कि बिना श्रम के अनाथ का जीवन निर्वाह संभव नहीं। यही से उनके बालश्रम का सिलसिला आरंभ होता है। दरिद्रता बड़ी बेहया होती है। किसी पर दया नहीं करती, न किसी की उम्र का लिहाज करती है। यही दरिद्रता, बालश्रम की मुख्य कारक है और दरिद्रता के लिए जिम्मेदार है सामाजिक मापदंड, असमानताएँ आदि। इन्हीं कारकों ने श्यौराज के कमजोर कंधों पर बचपन ढोने को मजबूर किया। अपनी जिम्मेदारियाँ अपने ही कंधों पर लेकर वे एक ऐसे मार्ग पर निकल पड़े जो अनिश्चित एवं अपरिचित था।

अपनी रोजी—रोटी के लिए बालक श्यौराज को एक गाँव से दूसरे गाँव दर—दर भटकना पड़ता। फिर भी दो जून की रोटी नसीब नहीं होती। दिल्ली मौसी के पास आने के बाद उनकी भूख की समस्या हल होने लगी। यहाँ उन्होंने बूट—पॉलिश, सीमेंट—इटा ढोना, नींबू—उबले अंडे बेचना, अखबार बांटना, केले बेचना आदि कार्य किए। पूरे दिन श्रम करने के पश्चात भरपेट भोजन और एक—दो आने बचाने का अवसर मिलने लगा। दिल्ली में पढ़ने के लिए स्कूल जाते बच्चों को देखकर उनमें भी पढ़ने की तीव्र इच्छा जगती। जब भी समय मिले अपने मौसेरे भाई से पढ़ना सीखते। मौसा ने सायंपाठशाला में दाखिले के लिए चेष्टा भी की, लेकिन

समय और भाग्य का साथ नहीं मिला। स्कूल जाने का सपना टूट गया।

बालश्रम की समस्या भूमिहीनता से उत्पन्न घोर दरिद्रता के शिकार बच्चों से जुड़ी समस्या है। वयस्कों की अपेक्षा बाल मजदूर कम मूल्य पर मालिकों को मिल जाते हैं। काम उनसे वयस्कों के समान लिया जाता है, लेकिन मजदूरी आधी। जहाँ बाल—श्रमिक हो वहाँ शोषण का अटूट संबंध रहा है। शोषण के साथ—साथ भद्दी गालियाँ और मारपीट उन्हें बोनस में मिलती हैं। ऊपर से अतिरिक्त श्रम भी जुड़ा रहता। लेखक होटल में काम करते वक्त उनके साथ हुई ज्यादतियों का वर्णन इस प्रकार करते हैं — “मैं यहाँ नया और सबसे छोटा था। इस कारण होटल में ज्यादा से ज्यादा दोहरा काम मुझसे ही लिया जाता था। मालिक का तो मैं नौकर था ही, अब नौकरों के लिए भी मैं बेगार में नौकर हो गया था। यह अतिरिक्त सेवा लिया जाना मेरी इच्छा के विरुद्ध था। परंतु मैं न कैसे करता?”<sup>5</sup>

इयौराज के समक्ष केवल अपनी भूख की समस्या न थी। वे भाई—बहनों का पेट पालने हेतु कमर तोड़ मेहनत करते। अतः काम छूट जाने के डर से अपने साथ हुए अन्याय के विरुद्ध आवाज नहीं उठा पाते थे। पिता की मृत्यु ने उन्हें होश संभालते ही बाल—श्रमिक बना दिया तो बाल मजदूरी ने इतने धाव दिये कि वे आज भी भर नहीं सकें। लेखक का जीवन छुआछूत, गरीबी, उपेक्षा, शोषण तथा संघर्ष की कहानी है। उन्हें जीवन के हर कदम पर अपनी मेहनत की खानी पड़ी है, चाहे उम्र कुछ भी हो — “मैंने काम करके ही रोटी खाई है और इतनी कीमतें चुकाई हैं कि समाज मेरे बाल—श्रम का भुगतान कर दे तो मैं आज से शेष जीवन बगैर कमाए खाने का हकदार हूँ।”<sup>6</sup> पेट की आग के लिए उन्हें चुपचाप रहना पड़ता, लेकिन उनमें हीनतावोध नहीं थी। वे स्वाभिमानी थे। दिल्ली के ठेकेदार वाली घटना इसका प्रमाण है। जूठन से उन्हें घृणा थी।

शिक्षा मनुष्य को मनुष्य बनकर जीने योग्य बनाती है। उसके सर्वमुखी विकास में सहायक होती है। लेकिन हमारे समाज का दुर्भाग्य है कि यहाँ समाज का एक वर्ग जात—पांत, छुआछूत तथा एकाधिकार के षड्यंत्रों के तहत शिक्षा की सुविधाओं से वंचित रहा है। ऊपर से अभाव, भूखमरी और नियतिवाद ने इस वर्ग को शिक्षा के विषय में सोचने का अवसर ही नहीं दिया। बावजूद इसके श्यौराज की इच्छा शक्ति एवं दृढ़ संकल्प का ही परिणाम है कि उन्होंने जीवन की उपलब्धियों को हासिल किया। अपने संघर्ष और सामर्थ्य से परिस्थितियों को हरा दिया। वे कीचड़ में खिले कमल तथा काँटों में खिले गुलाब की तरह हर दलित युवा के लिए प्रेरणा हैं। जीवन के अभावों, अनाथपन, पेट की ज्वाला एवं समाज की दोहरी मार से वे भाग्यवादी या हीनभावना से ग्रस्त नहीं हुए, बल्कि जितनी ठोकर लगती उतनी ही कीचड़ से निकलने की इच्छा शक्ति दृढ़ होती गई। आज दिल्ली विश्वविद्यालय जैसे गरिमामय संस्थान में अध्यापन का कार्य कर रहे हैं। दलित साहित्य और आंदोलन के जाने—माने हस्ती हैं। अतः घोर दरिद्रता में अनियमित एवं अव्यवस्थित शिक्षा से भविष्य को व्यवस्थित बनाने की जदोजहद है ‘मेरा बचपन मेरे कंधों पर’ आत्मकथा। इस विषय में वरिष्ठ पत्रकार अमित सेन गुप्ता लिखते हैं — “इस बच्चे में अपनी आत्मा की गरिमा के साथ और श्रम की खामोश शालीनता के साथ दीये की मंद रोशनी में स्वयं की दासता के बारे में पढ़ते—सबक लेते हुए, सीखते और पहले के सीखे हुए को अनसीखा करते हुए, खुद अपने द्वंद्व को विखण्डित करते हुए, खामोशी से हर चीज को एक रचनात्मक बगावत में तब्दील करते हुए, आत्मा और चमड़ी के पुनर्जीवन में परिवर्तित करते, मुक्ति, अर्थ, संवेदना, आकांक्षा, करुणा और मानवता का आश्वर्यजनक साहित्य रचते हुए धूमकेतु की भाँति आगे आने की कार्यशीलता है।”<sup>7</sup>

ઇસ પ્રકાર શ્યૌરાજ સિંહ બેચૈન કી આત્મકથા 'મેરા બચપન મેરે કંધોं પર' અભાવગ્રસ્ત બચપન કે સંઘર્ષો તથા શોષણ સે શિક્ષા કે માધ્યમ સે ઉબરને કી કથા હૈ। શ્યૌરાજ કે આંસૂ, સંઘર્ષ તથા પીડા કેવલ ઉનકે નહીં હૈ, યહ સમાજ કે નિમ્ન માને જાને વાલે દબે—કુચલે, નિર્ધન, ભૂખે દલિત બચ્ચોની કી કથા હૈ। જિન્હેં બચપન મેં ભી બચપન જીને કા હક નહીં મિલતા | પેટ કી જવાલા, સાધનહીનતા, રોજગાર કા અભાવ, સામાજિક ભેદભાવ જૈસે કારક ઉનકા બચપન છિન લેતે હૈનું। શ્યૌરાજ જૈસે વિવશ બચ્ચે અપને કંધોં પર અપના બચપન ઢોયે જીને કે લિએ સંઘર્ષ કરતે હૈનું | બચ્ચે દેશ કા ભવિષ્ય કહે જાતો હૈનું, લેકિન શ્યૌરાજ જૈસે બચ્ચોની કા કયા જિનકા વર્તમાન અંધકારમય ઔર ભવિષ્ય અનિશ્ચિતતાઓને સે ભરા હો। સમતા, અધિકાર કે સારે નારે અપને અર્થ ખો દેતે હૈનું। બાળશ્રમ કે ઘાવ ઇતને ગહરે હૈનું કી સમાજ કી કોઈ ભી દલીલ ભર નહીં સકતી | યહ આત્મકથા સમાજશાસ્ત્રીય દૃષ્ટિ સે ગ્રામીણ સ્તર પર દલિતોને શોષણ, અસ્પૃશ્યતા, ભૂમિહીનતા, બેરોજગારી, શિક્ષા કા અભાવ આદિ વાસ્તવિકતા સે પરિચય કરતી હૈ। સાથ હી ઘોર દરિદ્રતા, અભાવ ઔર ઉત્પીડન કે બીચ ભી આદર્શ સંસાર કે સપણોનો જીવિત રખને કી પ્રેરણ ભી દેતી હૈ | વ્યક્તિ, શિક્ષા, દૃઢ નિશ્ચય, મેહનત ઔર સકારાત્મક સોચ સે જીવન કો સહી દિશા એવં લક્ષ્ય પ્રદાન કર સકતા હૈ | વર્ણવ્યવસ્થા, છુઆછૂત, ઉપેક્ષા, તિરસ્કાર, બાળશ્રમ ઔર શોષણ આદિ કે પ્રતિ ઉનમેં શાંત, વૈચારિક, રચનાત્મક આક્રોશ દેખા જાતા હૈ લેકિન કહીં ઉનમેં કિસી વ્યક્તિ યા સમાજ કે પ્રતિ બૈર, ઘૃણા યા વિદ્વેષ નહીં હૈ | અતઃ યહ આત્મકથા દલિત બચ્ચોની બાળશ્રમ ઔર શોષણ કી મહાગાથા હોને કે સાથ—સાથ સમરસતા, ભ્રાતૃત્વ તથા માનવતા કી મિસાલ ભી હૈ |

અસિસ્ટેંટ પ્રોફેસર, હિન્દી વિભાગ  
મનોહારી દેવી કનોઈ મહિલા મહાવિદ્યાલય  
ડિબ્રૂગढ— 786001 (অসম)  
મોબાઇલ — 7896263212

### સંદર્ભ:-

1. બેચૈન, શ્યૌરાજ સિંહ, મેરા બચપન મેરે કંધોં પર, વાણી પ્રકાશન, નયી દિલ્લી, દ્વિતીય સંસ્કરણ –2013, પૃષ્ઠ – આવરણ પૃષ્ઠ |
2. વહી, પૃષ્ઠ – 5
3. કૌશલ, ડૉ લલિતા, ચર્ચિત હિન્દી કી દલિત આત્મકથાએँ : એક મૂલ્યાંકન, સાહિત્ય સંસ્થાન, ગાજિયાબાદ, પ્રથમ સંસ્કરણ – 2010, પૃષ્ઠ – 18
4. બેચૈન, શ્યૌરાજ સિંહ, મેરા બચપન મેરે કંધોં પર, વાણી પ્રકાશન, નયી દિલ્લી, દ્વિતીય સંસ્કરણ – 2013, પૃષ્ઠ – 40
5. વહી, પૃષ્ઠ – 235
6. વહી, પૃષ્ઠ – 163
7. પૃષ્ઠ – 6

## ગ્રામ પંચાયતોની પર ડૉ. ભીમરાવ અંબેડકર વ મહાત્મા ગાંધી કે વિચારોની તુલનાત્મક અધ્યયન – સુરેન્દ્ર (શોધાર્થી)

**સારાંશ** – ગ્રામ પંચાયતોની કો અનુચ્છેદ 40 કે દ્વારા ભારત કે મૂલ સંવિધાન મેં સ્થાન તો મિલા પરન્તુ ના તો મહાત્મા ગાંધી કે ગ્રામ સ્વરાજ કો મૂર્ત રૂપ મિલ સકા તથા ના હી ડૉ. અંબેડકર કે દૃષ્ટિકોણ કો અપનાયા જા સકા | ડૉ. ભીમ રાવ અંબેડકર પ્રાચીન ભારતીય ગ્રામીણ વ્યવસ્થા કો સંવિધાન મેં જિન કારણોની વજહ સે સ્થાન નહીં દેના ચાહતે થે ઉનમેં સબસે મહત્વપૂર્ણ કારક ભારતીય ગ્રામીણ વ્યવસ્થા મેં કુછ વર્ગોની કો સામાજિક, આર્થિક, રાજનૈતિક, ધાર્મિક વ ન્યાયિક અધિકારોને સે વંચિત કિયા જાના થા | પ્રત્યક્ષ તૌર પર કિએ ગએ અનુભવોની વ ગહન ચિંતન ને ઉનકે ઇસ દૃષ્ટિકોણ કો યહ આધાર પ્રદાન કિયા જો ગાંધીવાદી વિચારોની સે વિપરીત થા | ભારતીય સંવિધાન મેં 73વેં સંવિધાન સંશોધન કે દ્વારા ડૉ. ભીમ રાવ અંબેડકર કે ગાવોની વ ગ્રામ પંચાયતોની પર ખઢે કિએ ગએ સવાલોની નિદાન કે અનુરૂપ પંચાયતી રાજ મેં ઉન પ્રાવધાનોની

શામિલ કિયા ગયા હૈ જો શોષિતોં, વંચિતોં, પિછડોં વ સમાજ મેં હાશિયે પર રહે ગए વર્ગો કો ગ્રામીણ પરિવેશ કી મુખ્ય ધારા મેં સમાહિત કરને કે સાથ-સાથ મહાત્મા ગાંધી કે ગ્રામ પંચાયતોં કે સ્વપ્ન કો ભી મૂર્ત રૂપ પ્રદાન કરતા હૈ। યહ સંશોધન ગ્રામ પંચાયતોં પર દોનોં વિચારધારાઓં કો એક સૂત્ર મેં પિરોને કા કાર્ય કરતા હૈ।

**પ્રસ્તાવના** – ભારતીય સંવિધાન કે પિતા ડૉ. ભીમ રાવ અંબેડકર વ ભારત કે રાષ્ટ્રપિતા મહાત્મા ગાંધી દોનોં ને રાષ્ટ્ર નિમાર્ણ મેં અપના અહમ યોગદાન દિયા હૈ। મહાત્મા ગાંધી ને જહાઁ દેશ કી આજાદી કી લડાઈ, હિન્દુ-મુસ્લિમ ભાઈચારે, મહિલાઓં કે ઉત્થાન કે સાથ-સાથ દલિતોં કે ઉદ્વાર કે લિએ પ્રયાસ કિએ વહીં ડૉ. ભીમ રાવ અંબેડકર ને ભારતીય સંવિધાન કે નિર્માણ, સામાજિક ન્યાય આંદોલન, જાતિ ઉન્મૂલન કે પ્રયાસ, મહિલાઓં કે અધિકાર, દેશ કી આર્થિક નીતિયોં મેં સહયોગ, કૃષિ સુધાર વ આર્થિક સુધાર આદિ ક્ષેત્રોં મેં અપના મહત્વપૂર્ણ યોગદાન દિયા। મહાત્મા ગાંધી વ ડૉ. ભીમ રાવ અંબેડકર કે વિચારોં મેં આપરી સામન્જરસ્ય કી સ્થિતિ નહીં રહી વ દોનોં કે વિચારોં મેં ભારતીય ગ્રામીણ વ્યવસ્થા વ પંચાયતી રાજ કો લેકર ભી વિભિન્નતાએં રહી જિસકા પ્રભાવ ભારત કે મૂલ સંવિધાન પર ભી સ્પષ્ટ રૂપ સે દેખા જા સકતા હૈ। એક ઔર ડૉ. ભીમ રાવ અંબેડકર જહાઁ દેશ કે વિકાસ કે લિએ શહરીકરણ વ બઢેં ઉદ્યોગોં વ આર્થિક નીતિયોં કો વિશેષ મહત્વ પ્રદાન કરતે હુએ નજર આતે હૈ વહીં દૂસરી ઔર મહાત્મા ગાંધી ગ્રામ પંચાયતોં કે દ્વારા ગ્રામીણ વિકાસ કે મહત્વ વ ગ્રામીણ જીવન શૈલી પર બલ દેતે હુએ નજર આતે હૈ, જિસસે ગ્રામીણ સમુદાય કે દ્વારા ગાંં કો આત્મનિર્ભર બનાયા જા સકે। યે દોનોં વિચારધારાએં જો કિ પરસ્પર એક-દૂસરે કે વિપરીત વ વિરોધ સ્વરૂપ ખડી હુઈ નજર આતી હૈ ફિર ભી ઇન વિચારધારાઓં કો ભારતીય સંવિધાન મેં ગહરી વ અમિટ છાપ કો છોડતે દેખા જા સકતા હૈ।

**મૂલ શબ્દ:**— પંચાયતી રાજ, ગ્રામ પંચાયતે, મહાત્મા ગાંધી વ પંચાયતી રાજ, ગ્રામ પંચાયતે વ ડૉ. ભીમ રાવ અંબેડકર

સંવિધાન સભા મેં ડૉ. ભીમ રાવ અંબેડકર વ ગાંધીવાદી વિચારોં મેં ટક્કરાવ હોતે દેખા જા સકતા હૈ। હાલાંકિ મહાત્મા ગાંધી સંવિધાન સભા કા ભાગ નહીં થે પરન્તુ ભારત કી સંવિધાન સભા મેં ગાંધીવાદી વિચારોં સે પ્રભાવિત અનેક એસે સદરસ્ય મૌજૂદ થે જો ગાંધી કી અવધારણ પર આધારિત ગ્રામ પંચાયતોં કો સંવિધાન મેં વિશેષ સ્થાન પ્રદાન કિએ જાને કી અગવાહી કર રહે થે। મહાત્મા ગાંધી રામ રાજ્ય કી સ્થાપના કે પક્ષધર થે। અપને ઇસ સ્વપ્ન કો સાકાર કરને કે લિએ મહાત્મા ગાંધી ને ગ્રામ સ્વરાજ કા વિચાર પ્રસ્તુત કિયા। ગાંધી દ્વારા પ્રસ્તુત કિયા ગયા ગ્રામ સ્વરાજ કા વિચાર વાસ્તવ મેં પ્રાચીન ભારતીય ગ્રામીણ વ્યવસ્થા કો હી સ્થાપિત કરને કા વિચાર થા। ગાંધી કે ઇસ વિચાર કે અનુસાર ગ્રામ રાજનૈતિક, આર્થિક, સામાજિક, સાંસ્કૃતિક વ ન્યાયિક તૌર પર પૂર્ણ રૂપ સે આત્મ નિર્ભર હોગે વ ગાંં હી દેશ કી સમ્પાર્ષ્ય વ્યવસ્થા કી ધૂરી હોગેં। ગાંધી કે ગ્રામ સ્વરાજ મેં સમાજ મેં સદિયોં સે હાશિયે પર રહે ગાર્ગો કે લિએ વિશેષાધિકારોં કા અભાવ થા। મહાત્મા ગાંધી ગ્રામ સ્વરાજ કી અવધારણ કો ગ્રામ પંચાયતોં કે માધ્યમ સે સંવિધાન મેં સ્થાન દિલાના ચાહતે થે।

ડૉ. ભીમ રાવ અંબેડકર ને ગ્રામીણ પ્રશાસનિક વ્યવસ્થા, ભારતીય ગાંંઓ વ ગ્રામ પંચાયતોં પર સંવિધાન સભા મેં અપને તાર્કિક વક્તવ્યોં કે દ્વારા યહ સિદ્ધ કરને કા પ્રયાસ કિયા કે ભારતીય ગાંંઓ ને પ્રાચીન કાલ સે અપના વિકાસ નહીં કિયા હૈ। ગાંંઓ કી તર્જ પર ભારત કા વિકાસ સમ્ભવ નહીં હૈ। ગાંં સદિયોં સે જાતિ વ્યવસ્થા વ શોશેણ કે આધાર પર ટિકે હુએ હૈં વ ઇસકે બિના ભારતીય ગાંંઓ કા કોઈ આધાર નહીં હૈ। સંવિધાન સભા મેં ડૉ. ભીમ રાવ અંબેડકર ને ગ્રામીણ વ્યવસ્થા પર તીખા પ્રહાર કિયા વ કહા કી ગાંંઓ ને કેવેલ ખુદ કો બચા કર રહા હૈ ખુદ કો બચાને કે અલાવા ગાંંઓ ને કિસી ભી પ્રકાર કે વિકાસ કે લિએ યોગદાન નહીં દિયા હૈ તથા ગાંંઓ કે દ્વારા સદિયોં સે પરમ્પરાઓં વ જાતિ વ્યવસ્થા કે નામ પર વંચિત વર્ગો કા શોષણ કિયા હૈ ઇસલિએ ઉન્હોને ગાંંઓ કો અંધકાર કી માંદ કહા।

संविधान सभा में गांवों को प्रशासन की बागड़ोर दिए जाने को लेकर एक बहस छिड़ गई। इस बहस में संविधान सभा दो धड़ों में बंटी हुई नजर आई, जिसमें एक पक्ष वह था जो गांवों को पारम्परिक ग्राम पंचायतों के द्वारा अधिकार व शक्तियां प्रदान किए जाने के पक्ष में था जिस पर गांधीवादी विचारों की छाप स्पष्ट रूप से नजर आ रही थी तथा दूसरे पक्ष की ओर डॉ. भीम राव अम्बेडकर थे जो पारम्परिक ग्राम पंचायतों का विरोध करते हुए इनका संविधान सभा में खंडन कर रहे थे।

डॉ. भीम राव अम्बेडकर के अनुसार ग्राम पंचायतों को अधिकार दिए जाने पर वे पारम्परिक रूप से ही कार्य करेंगी तथा पारम्परिक रूप महिलाओं व समाज के निम्न तबके को अधिकार नहीं देता है। दूसरी ओर गांधीवादी ग्राम स्वराज की अवधारणा भी पारम्परिक रूप पर ही आधारित थी जिसमें जाति पर आधारित एक सामुदायिक व्यवस्था की स्थापना की कल्पना की गई थी तथा इसमें वंचित वर्गों की दशा सुधारने के लिए विशेषाधिकारों का अभाव था। संविधान सभा में अपने दिए गए तर्कों के आधार पर डॉ. भीम राव अम्बेडकर ने प्राचीन काल से चली आ रही पारम्परिक ग्रामीण व्यवस्था की कटु आलोचना की। यह भी ध्यान देने योग्य पहलू है कि डॉ. भीम राव अम्बेडकर का संविधान सभा में भारतीय गांवों के प्रति अपनाया गया तार्किक दृष्टिकोण संविधान सभा को भारतीय गांवों की वास्तविक स्थिति से अवगत करवाना था जिसमें वंचित वर्गों के कल्याण के लिए किसी भी प्रकार की व्यवस्था का अभाव था।

डॉ. भीम राव अम्बेडकर के द्वारा अपनाए गए कड़े रुख के कारण भारत के मूल संविधान में पारम्परिक ग्राम पंचायतों के लिए कोई विशेष प्रावधान नहीं किए गए परंतु महात्मा गांधी के विचारों के प्रभाव व संविधान सभा में गांधीवादी सदस्यों के प्रभाव के कारण ग्राम पंचायतों को अनुच्छेद 40 के द्वारा राज्य के नीति निदेशक तत्वों में स्थान प्रदान किया गया। संविधान

लागू होने के बाद 24 अप्रैल 1993 को 73वें संविधान संशोधन के द्वारा भारतीय संविधान में ग्राम पंचायतों की स्थापना के लिए एकरूपता व ग्रामीण स्थानीय स्वायत्तता को लेकर बाध्यकारी प्रावधान किए गए तथा समाज में हाशिये पर रखे वर्गों, महिलाओं, दलितों व पिछड़ों के लिए आरक्षण की व्यवस्था के द्वारा इन वर्गों को मुख्यधारा में लाने का प्रयास किया गया। इसे डॉ. भीम राव अम्बेडकर द्वारा दलितों के किए गए प्रयास को आगे बढ़ाने के एक कदम के रूप में देखा जा सकता है।

**निष्कर्ष—**प्राचीन काल से भारतीय ग्राम भारतीय संस्कृति की धरोहर व पालनहार रहे हैं। भारतीय गांवों में प्राचीन काल से ही ग्राम पंचायतों ने राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक व प्रशासनिक रूप से एक व्यवस्था की स्थापना करते हुए इन्हे एक सूत्र में पिरोए रखा है। प्राचीन भारतीय ग्रामीण व्यवस्था जैसी व्यवस्था समकालीन विश्व में कहीं पर भी देखने को नहीं मिलती थी। समय के साथ—साथ हुए बदलावों व सामाजिक बुराईयों ने इस व्यवस्था को भी प्रभावित किया। समाज के कुछ विशेष वर्गों को सामाजिक भेदभाव के कारण इस व्यवस्था से अलग किया गया। महात्मा गांधी ने ग्राम पंचायतों का जहां समर्थन किया वहीं डॉ. भीम राव अम्बेडकर ने अपने तार्किक दृष्टिकोण से भारतीय गांवों में भेदभाव का शिकार रहे वर्गों की वास्तविक स्थिति को उजागर करते हुए उनके लिए विशेष प्रावधानों की वकालत की। इन दोनों महान विभूतियों के अपने—अपने प्रयासों के कारण वर्तमान में स्थापित होने वाली पंचायती राज व्यवस्था को एक आधुनिक आधार मिला जिससे ग्राम पंचायतों सरकार के तीसरे स्तर की स्थापना करते हुए तथा वंचित वर्गों के प्रतिनिधित्व को संवेधानिक अधिकार प्रदान करती हुई नजर आती है।

डॉ. तिलक राज आहुजा शोध पर्यवेक्षक औम स्टर्लिंग ग्लोबल विश्वविद्यालय

**સંદર્ભ:-**

- કટારિયા સુરેન્દ્ર, મહાત્મા ગાંધી કા પંચાયતી રાજ, કુરુક્ષેત્ર, પ્રકાશન વિભાગ સૂચના ભવન, નई દિલ્લી, અગસ્ટ 2006, પૃષ્ઠ 32–33.
- Ayar S.A., Ambedkar Vs Gandhi: The Risks Of Village empowerment, Feb 2014, Times of India.
- મંથન, ગાંબ સ્વશાસન ઔર પંચાયતી સંસ્થાન, 2016, અનુજ્ઞા બુક્સ દિલ્લી.
- Roy Arundhati, The Doctor and the Saint, 2019, Penguin Random House India Pvt.Ltd.Gurgoan, Haryana.
- ભટનાગર આર ઎સ, ગાંધી જી ઔર સર્વાદ્ય, યોજના પ્રકાશન વિભાગ સૂચના ભવન, નई દિલ્લી. અક્ટૂબર 2019, પૃષ્ઠ 77–79.
- Pal Mahi, Dr. B.R. Ambedkar, Dalits and Decentralised Rural Goverence in India: Ideas, Application and Resality, Vol. LVII, No 17, April 2019 Mainstream, New Delhi.
- Aslam M., Panchayati Raj in India, 2007, National Book trust, India, New Delhi.
- The Constitution of India <https://legislative.gov.in/constitution-of-india>.
- રોય અંલધતિ, અનુવાદ જયહિન્દ યાદવ અનિલ, લાલ રતન, એક થા ડૉક્ટર એક થા સંત, 2021, પાંચવાં સંસ્કરણ, રાજકમલ પ્રકાશન, નई દિલ્લી.

વિકાસ કો સાંસ્કૃતિક ક્ષેત્ર કે અંતર્ગત ગિના જાતા હૈ ક્યોંકિ સામાજિક વિકાસ કે પરિણામસ્વરૂપ માનવ સમાજ કી શ્રેષ્ઠતમ્ ઉપલબ્ધિયાં સંસ્કૃતિ કહલાતી હૈનું। સંસ્કૃતિ કે ક્ષેત્ર મેં ચેતના ઔર વ્યવહાર દોનોં કા સામંજસ્ય રહતા હૈ। વ્યવહાર ક્ષેત્ર મેં ઉસે આદર્શ પરંપરા ઔર ચેતના ક્ષેત્ર મેં સૃજનાત્મક ક્ષમતા યા કલાત્મક અનુભવ કહ સકતે હૈનું। ચેતના ઔર વ્યવહાર સંબંધિત જીવન હી સંસ્કૃત હો સકતા હૈ। સાંસ્કૃતિક ચેતના વિકાસશીલ હોકર જબ સૃજનાત્મક બન જાતી હૈ તથી સાહિત્ય કા ઉદ્ભબ હોતા હૈ, કિસી ભી જાતિ યા વર્ગ કા કલાત્મક યા સૃજનાત્મક ઉન્મેષ સંસ્કૃતિ કે અંતર્ગત આતા હૈ ઔર મનુષ્ય કી સૃજનાત્મક ક્ષમતા ઉસકી મौલિક વિશેષતા હૈ। પરિવેશ કે પ્રતિ ઉસકી પ્રતિક્રિયાએં, હાલાતોં કે થ્યેડે ઉસે બેચૈન કર દેતે હૈનું। સાહિત્યકાર ઉન પ્રતિક્રિયાઓં કો ભાષા કા માધ્યમ દેકર અભિવ્યક્ત કરના ચાહતા હૈ। સાહિત્યકાર કી સાહિત્યિક પ્રતિભા કે મૂલ્યાંકન કા આધાર ઉસકી સાંસ્કૃતિક ચેતના ભી માની જા સકતી હૈ ક્યોંકિ પ્રતિભાશાલી સાહિત્યકાર અપની સમૃદ્ધ— સાહિત્યિક પરંપરા કા મર્મજ્ઞ હોને કે નાતે ઉસકી સહી –સહી વ્યાખ્યા સમાજ કે સામને પ્રસ્તુત કરતા હૈ ઔર સાથ હી સામાજિક સંવેદનાઓ, ક્રિયાઓ, પ્રતિક્રિયાઓં તથા યુગીન અનુભૂતિયોં કા વિશ્લેષણ પ્રસ્તુત કરતા હૈ। ઇસ પ્રકાર એક ઓર જહાં વહ સમાજ સે કુછ ગ્રહણ કરતા હૈ, વહીનું: સંશોધન ઔર પરિષ્કાર કે સાથ આદર્શ રૂપ મેં સમાજ કો કુછ પ્રદાન ભી કરતા હૈ।

**સંસ્કૃતિ** – સંસ્કૃતિ માનવ કી વિધાયિકા શક્તિ હૈ। ઇસકે માધ્યમ સે હમ અપની વૈચારિક, આધ્યાત્મિક તથા ભાવાત્મક ધરોહર કા ઉત્કર્ષ કરતે હૈનું। સંસ્કૃતિ મેં માનવ— કુલ કે અનુભવોં કા લેખા—જોખા સંસ્કારોં કે રૂપ મેં સુરક્ષિત રહતા હૈ। આચાર્ય હજારી પ્રસાદ દ્વિવેદી કે અનુસાર—‘સંસ્કૃતિ મનુષ્ય કી વિવિધ સાધનોં કી સર્વોત્તમ પરિણતિ હૈ, ધર્મ કે સમાન વહ ભી અવિરોધી વર્સ્તુ હૈ, વહ સમસ્ત દૃશ્યમાન વિરોધોં મેં સામંજસ્ય સ્થાપિત કરતી હૈ। ભારતીય જનતા કી વિવિધ સાધનાઓં

સંસ્કૃતિ ઔર સાહિત્ય દોનોં એક— દૂસરે પર આશ્રિત હૈનું। એક કે બિના દૂસરે કી પ્રગતિ સંભવ નર્હીં। જિસ જાતિ કી જિતની ઉન્નત સંસ્કૃતિ હોગી, ઉસકા સાહિત્ય ભી ઉતના હી ઉન્નત એવં પ્રાંજલ હોગા ક્યોંકિ સાહિત્ય, સમાજ કા દર્પણ હોતા હૈ ઔર સમાજ કા સંબંધ માનવ— સમૂહ સે હૈ। સંસ્કૃતિ ઇસી માનવ —સમાજ કો ઉન્નત બનાતી હૈ। મનુષ્ય સામાજિક પ્રાણી હૈ ઉસકે અંતર ઔર બાહ્ય વૈયક્તિક ઔર સામાજિક ગુણોં કા વિકાસ સમાજ— સાપેક્ષ હોતા હૈ। યહ વિકાસ સાંસ્કૃતિક ચેતના ઔર મૂલ્યોં પર નિર્ધારિત હોતા હૈ। ઇસ

કી સબસે સુંદર પરિણિતિ કો હી ભારતીય સંસ્કૃતિ કહા જા સકતા હૈ।<sup>1</sup> સંસ્કૃતિ કા ઘનિષ્ઠ સંબંધ સંસ્કાર સે હોતા હૈ ઓર ઇન સંસ્કારોં કે નિર્માણ કી ભી એક પ્રક્રિયા હૈ જિસ કા મૂલ્યાંકન હમ માનવ જાતિ કે આદિમ યુગ સે અબ તક કી વિકાસમય સ્થિતિ કે આધાર પર સરલતા સે કર સકતે હૈનું। 'સંસ્કૃતિ' ઉન સમર્સ્ત ક્રિયાઓં કો કહતે હૈનું જિનકે દ્વારા મનુષ્ય અપને કો વિશ્વ કી નિરૂપયોગી કિંતુ અર્થવતી છવિયોં સે, ફિર વે છવિયાં ચાહે પ્રત્યક્ષ હોં અથવા કલ્પિત, સંબંધિત કરતા હૈ।<sup>2</sup> મનુષ્ય ને જો આચરણ ઔર વ્યવહાર સીખા, પરંપરા દ્વારા જિસ રહન—સહન, આચાર— વિચાર ઔર માન્યતા કો ગ્રહણ કિયા તથા ઉસે સામાન્ય સે વિશિષ્ટ બનાયા, વહી સંસ્કૃતિ બન ગઈ।

**પરિવેશ** — પરિવેશ કા સામાન્ય અર્થ —ચારોં ઔર કા વાતાવરણ, ગતિવિધિયાં, પરિસ્થિતિયાં જો વ્યક્તિ વિકાસ કો પ્રભાવિત કરેં। ભૌગોળિક પરિવેશ કા સંબંધ નિશ્ચિત ભૂ—ભાગ કે નિવાસિયોં કે રહન—સહન, ખાન—પાન તથા પ્રાકૃતિક ઉપાદાન સે હૈ। પ્રો. વैદ્યનાથ શર્મા કા માનના હૈ કિ 'સંસાર કી પ્રસિદ્ધ સંસ્કૃતિયાં નદી, ઘાટિયોં મેં હી પલ્લવિત—પુષ્ટિ હુઝી હૈનું'<sup>3</sup> ભૌગોળિક પરિવેશ તથા સીમાએં પ્રત્યેક દેશ કી સંસ્કૃતિ કો પ્રભાવિત કરતી હૈનું। સંસ્કૃતિ કે વિકાસ મેં વાતાવરણ સંબંધી ભૌગોળિક એકતા, ભૌતિક સમૃદ્ધિ તથા પ્રાકૃતિક સૌંદર્ય કા યોગદાન રહતા હૈ। રાજેંદ્ર યાદવ કે અનુસાર — 'પરિવેશ કા અર્થ પરિસ્થિતિયાં પરંપરાએં ઔર સંસ્કાર હૈનું। પરિસ્થિતિ ઔર વ્યક્તિ કા આવિભાજ્ય સંબંધ ઔર અનિવાર્ય સંદર્ભ પરિવેશ હૈ।'<sup>4</sup> અતઃપરિવેશ માનવ જીવન કે પ્રત્યેક અંશ મેં સમાહિત હૈ। 'સાહિત્યકાર કી રચના પ્રક્રિયા મેં સમાજ, લેખક ઔર સાહિત્ય પરસ્પર એક—દૂસરે કો ઇસ તરહ પ્રભાવિત કરતે હૈનું કી ઇનમેં સે પ્રત્યેક ક્રમશા: વિકસિત હોતા રહતા હૈ—સમાજ સે લેખક, લેખક સે સાહિત્ય ઔર સાહિત્ય સે પુન: સમાજ। સમાજ સે તાત્પર્ય રાજનીતિક, આર્થિક ઔર સામાજિક પરિવેશ હૈ જો લેખક કી દૃષ્ટિ કા પરિચાલન કરતા હૈ। યહાં સમાજ, પરિવેશ કે અર્થ મેં

પ્રયુક્ત હોતા હૈ।<sup>5</sup> અતઃ સ્પષ્ટ હૈ કિ પરિવેશ વ્યક્તિત્વ નિર્માણ મેં સહાયક હોતા હૈ બિના પરિવેશ કે વ્યક્તિ અસ્તિત્વ કે બારે મેં સોચના ભી મુશ્કલ હૈ।

**સાહિત્ય—'સાહિત્ય'** શબ્દ કા અર્થ હિત સહિત હોના હૈ। 'હિતસ્ય ભાવરુ સાહિત્ય' અર્થાત્ હિત કે સાથ હોને કા ભાવ હી સાહિત્ય હૈ। કિસી ભી દેશ કી સંસ્કૃતિ કો સમજને કે લિએ ઉસકે સાહિત્ય કો સમજના હોતા હૈ ક્યોંકિ સાહિત્ય મેં સાંસ્કૃતિક ચેતના કી અભિવ્યક્તિ હોતી હૈ। 'સાંસ્કૃતિક ચેતના વિકાસશીલ હોકર જબ સૃજનાત્મક બન જાતી હૈ તભી સાહિત્ય કા ઉદભવ હોતા હૈ, કિસી ભી જાતિ યા વર્ગ કા કલાત્મક યા સૃજનાત્મક ઉન્મેષ સંસ્કૃતિ કે અંતર્ગત આતા હૈ ઔર વહ સૃજનાત્મક એકતા ઔર સૌંદર્યવૃત્તિ કી ઉચ્ચતા પ્રાપ્ત કર લેતે હૈનું, તભી સાહિત્ય કા સૃજન હોતા હૈ।<sup>6</sup> સંસ્કૃતિ, સાહિત્ય કો જન્મ દેતી હૈ। વહી સાહિત્ય ભવિષ્ય મેં સંસ્કૃતિ કા અગ્રદૂત બન સંસ્કૃતિ કી વિશેષતાઓં કા પ્રચાર— પ્રસાર કરતા હૈ।

સમર્સ્ત જર્જર રૂડ્ધિયાં ઔર પ્રથાએં પ્રતિભાશાલી સાહિત્યકાર કે લિએ ઇસલિએ મહત્વપૂર્ણ હોતી હૈનું ક્યોંકિ ઉનકે આધાર પર સમાજ કે પીડિત ઔર શોષિત સમાજ કા ચિત્રણ કરતા હુઝી વહ જનસામાન્ય મેં સહાનુભૂતિ કા ઉદય કર નર્ઝ સમ્પુષ્ટ સામાજિક વ્યવસ્થા કો સ્થાપિત કરને મેં સફળ હો જાતા હૈ। ઉસકી ઉસ રૂડ્ધિ વિરોધી પ્રક્રિયા મેં પ્રારંભ મેં ઉસે સામાજિક વિરોધ હી સહના પડ્યતા હૈ કિંતુ જૈસે —જૈસે લોગોં કો વ્યાપક હિત કી બાત સમજ મેં આતી હૈ વૈસે—વૈસે સાહિત્યકાર કા યશ એવં સમ્માન ભી બઢ્યતા જાતા હૈ। કબીર રૂડ્ધિવાદી જર્જર માન્યતાઓં કે પ્રતિ વિદ્રોહ ખંડા કરને વાલે એક સશક્ત સાહિત્યકાર થે જિનકો સમાજ કા કોપ ભાજન બનના પડ્યા। પરંતુ ફિર ભી સંત કવિ કબીર ને સાહિત્ય કે ઉસ પરમ ઉદ્દેશ્ય કો ક્ષણિક પ્રશંસા કે લિએ કુર્બાન નહીં હોને દિયા। ઇસી પ્રકાર સૂર્યકાંત ત્રિપાઠી 'નિરાલા', નાગાર્જુન, કેદારનાથ અગ્રવાલ, બાલકૃષ્ણ શર્મા 'નવીન' આદિ કવિયોં ને અપને ક્રાંતિકારી વિચારોં સે પરિવર્તનશીલતા કા બિગુલ બજાયા ઔર સમાજ કો સોચને કે લિએ મજબૂર કર દિયા જિસ દેશ યા જાતિ

का साहित्य जितना समृद्ध होगा उस देश की प्रगति भी उतनी ही अधिक मानी जाएगी। अनेक जातियां अपनी सृजनात्मक क्षमता के बल पर जीवन पद्धतियों का निर्माण करती हैं और यही जीवन पद्धतियां कुछ विद्वानों के मत में संस्कृतियां कहलाती हैं। संस्कृति हमेशा विकास की ओर अग्रसर रहती है संस्कृति कोई स्थिर वस्तु नहीं है। यह एक संस्कारित जीवन की शैली है जो युगानुरूप परिवर्तनों को आत्मसात् करते हुए सदा गतिशील रहती है। 'जब कोई जाति विकास करती है तो अपना परिष्कार और सुधार करते हुए कुछ विशिष्ट गुणों को महत्व देने लगती है। इन गुणों के विकास में काफी समय लगता है यह गुण उस जाति के जीवन के अभिन्न अंग बन जाते हैं ऐसे गुण किसी व्यक्ति अथवा समाज को संस्कारों के रूप में प्राप्त होते हैं।'<sup>7</sup> प्राचीन संस्कृति का रूप हमें वेदों, उपनिषदों, संहिताओं और ब्राह्मण ग्रंथों में उपलब्ध होता है। वस्तुतः साहित्य, संस्कृति को अमरता प्रदान करता है। एक सच्चा साहित्यकार अपने समय की राजनीतिक, वैज्ञानिक, आर्थिक, सांस्कृतिक प्रगति पर निगाह रखता है और उन सब पर लेखनी के माध्यम से अपनी राय प्रकट करता है। 'सामान्य साहित्यिक अर्थ में संस्कृति शब्द का प्रयोग सामाजिक संस्था एवं भौतिक उत्कर्ष के लिए किया जाता है संस्कृति समाज की उपलब्धि है जिसमें मानव की नैतिक, आध्यात्मिक एवं बौद्धिक उपलब्धि समाई हुई है।'<sup>8</sup>

अतः कहा जा सकता है कि सांस्कृतिक परिवेश और साहित्य का अंतर्संबंध ही नहीं है अपितु संस्कृति का संबंध मानव के भौतिक, आध्यात्मिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, साहित्यिक, दार्शनिक, कलात्मक आदि सभी प्रकार के महत्वपूर्ण विकास एवं जीवन के विविध पहलुओं से है। मानव जीवन के विविध पहलुओं से परंपरागत संस्कारों का बड़ा हाथ रहता है इसलिए संस्कृति का साहित्य एवं संस्कारों से घनिष्ठ संबंध है।

— सहायक आचार्य (हिंदी विभाग)  
 — सहायक आचार्य (भौतिकी विभाग)  
 राजकीय उत्कृष्ट महाविद्यालय नगरोदार  
 बगवां (कांगड़ा) हिमाचल प्रदेश 176047

## संदर्भ:—

1. हजारी प्रसाद द्विवेदी रु अशोक के फूल, पृ. 58, सत्साहित्य प्रकाशन सस्तासाहित्य मंडल, नई दिल्ली, संस्करण 1966
2. डॉ देवराज रु संस्कृति का दार्शनिक विवेचन, पृ. 173, हिंदी समिति, सूचना विभाग उत्तरप्रदेश शासन, लखनऊ, द्वितीय संस्करण 1972
3. रामशकल पांडेय (सं.) साहित्य—परिचय (शिक्षा और भारतीय संस्कृति विशेषांक) पृ. 215, संस्करण 1971
4. राजेंद्र यादव — कहानी खरूप और संवेदना, पृ. 77, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, प्रथम संस्करण 1968
5. डॉ. नामवर सिंह : इतिहास और आलोचना (समालोचना), पृ. 46, साहित्य प्रकाशन वाराणसी, प्रथम संस्करण 1962
6. डॉ. शिवशंकर त्रिवेदीरु हजारीप्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों में सांस्कृतिक चेतना, पृ. 26, साहित्य निलय, 49 बौद्धनगर नौबस्ता, कानपुर, प्रथम संस्करण 1997
7. डॉ. एस. एल. नागोरी : भारतीय संस्कृति, पृ. 2, चौड़ा रास्ता जयपुर, प्रथम संस्करण 1985
8. डॉ. ओमप्रकाश सारस्वत रु बदलते मूल्य और आधुनिक हिंदी नाटक, पृष्ठ 49, मंथन पब्लिकेशन, रोहतक, संस्करण 1983

## ‘नयी तालिम : एक नवीन शिक्षा पद्धति’

— मोनिका चौबे (शोधार्थी)

**सारांश** — वर्तमान समय में एक नवीन शिक्षा पद्धति की आवश्यकता है जो वर्तमान परिप्रेक्ष्य के अनुसार हो। शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं रहनी चाहिए। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे बालक का सर्वांगीण विकास हो। महात्मा गांधी जी के स्वतंत्रता संग्राम से हम सभी परिचित हैं, जिस प्रकार उन्हाने भारत को स्वतंत्र कराया उसी प्रकार से अपने विचारों द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में भी बहुमूल्य योगदान दिया है। गांधी जी ने परंपरागत शिक्षा पद्धति में नवीनता लाने का प्रयास किया है जिससे मनुष्य न केवल शिक्षित

હો બલ્ક સમાજ કે લિએ ઉપયોગી નાગરિક બને । ઉનકે શૈક્ષિક વિચાર ઉસ સમય કે શિક્ષા શાસ્ત્ર્યોં કે વિચારોં સે મિલતે—જુલતે નહોં થે । ગાંધી જી જીવન પર્યન્ત સત્ય ઔર અહિંસા કે માર્ગ પર ચલે, રાષ્ટ્ર કે નિર્માણ કે લિએ વિભિન્ન પ્રયોગ કિયે ઔર ઇન્હી કે માધ્યમ સે અપને વિચારોં કો પ્રસ્તુત કિયા । જિસે ઉન્હાને બુનિયાદી શિક્ષા કા નામ દિયા । ગાંધી જી કે શિક્ષા દર્શન ને ના કેવલ ભારત બલ્ક પૂરે સમાજ કો એક નર્ઝ દિશા દી હૈ । ઇસે હી નયી તાલીમ કે નામ સે જાના જાતા હૈ ।

## સાંકેતિક શબ્દ—નયી—નવીન , તાલીમ —શિક્ષા

**પ્રસ્તાવના—શિક્ષા** હમેં જીવન જીને કી કલા સિખાતી હૈ । શિક્ષા કે દ્વારા હી મનુષ્ય કે વ્યક્તિત્વ કા વિકાસ હો સકતા હૈ । ગાંધી જી કા શિક્ષા દર્શન ઉનકે જીવન દર્શન પર આધારિત હૈ । શિક્ષા હી એકમાત્ર સાધન હૈ જિસસે બાલક યા કિસી વ્યક્તિ કા સામાજિક, અર્થિક, સાંસ્કૃતિક, રાજનૈતિક તથા આધ્યાત્મિક વિકાસ હો સકતા હૈ । 23 અક્ટૂબર 1937 કો ગાંધી જી ને નયી તાલીમ કી યોજના બનાયી નયી તાલીમ કા વિચાર ભારત કે લિએ ઉનકા સર્વશ્રેષ્ઠ યોગદાન હૈ । ગાંધી જી કે શિક્ષા દર્શન મેં પ્રકૃતિવાદ, આર્દ્ધવાદ તથા પ્રયોજનવાદ કા સમન્ય હૈ । નયી તાલીમ કા મુખ્ય ઉદ્દેશ્ય કિતાબી જ્ઞાન કે સાથ—સાથ ઉત્પાદકીય કાર્ય કરવાને પર બલ દેતા હૈ । શિક્ષા એસી હોની ચાહિએ જો બાલક કો રચનાત્મક બના સકે, ઉસકી મનોવૃત્તિઓ મેં પરિવર્તન લા સકે । લોગોં મેં સામાજિકતા કી ભાવના કા વિકાસ કરે । દેશ એવં સમાજ મેં અહિંસા, પ્રેમ ઔર શાંતિ કા વાતાવરણ વિકસિત કરેં યહ સબ કેવલ શિક્ષા દ્વારા સંભવ હૈ શિક્ષા કો કેવલ જ્ઞાનોપાર્જન કા સાધન માત્ર નહીં હોના ચાહિએ બલ્ક લોગોં કી માનસિકતા મેં પરિવર્તન લાને વાલા ઉન્હેં એક દૃષ્ટિકોણ દેને વાલા હોના ચાહિએ । નયી તાલીમ કા ઉદ્દેશ્ય બાલક કો આત્મનિર્ભર એવં સ્વાવલંબી બનાના હૈ ।

**નયી તાલીમ કી અવધારણા—નયી તાલીમ દો શબ્દોં સે મિલકર બના હૈ, નયી તથા તાલીમ નયી કા**

અર્થ – આધુનિક યા નવીન તરીકા ઔર તાલીમ કા અર્થ હૈ— શિક્ષા યા જ્ઞાન । અર્થાત् નવીન જ્ઞાન યા નવીન શિક્ષા પદ્ધતિ કા પ્રાર્દુભાવ । યહ તાલીમ અહિંસક, સબકે લિએ સમાનતા તથા સમાજ કલ્યાણ કા ઉદ્દેશ્ય રહ્યતી હૈ । શિક્ષા કી વ્યવસ્થા મેં સુધાર તથા ગુણવત્તા કો બઢાને કે લિએ પ્રોત્સાહિત કરતી હૈ । નયી તાલીમ કો વર્ધા શિક્ષા યોજના, બુનિયાદી તાલીમ તથા બેસિક શિક્ષા કે નામોં સે ભી જાના જાતા હૈ । નયી તાલીમ પ્રાથમિક વ ઉચ્ચ પ્રાથમિક શિક્ષા સે સંબંધિત હૈ । ઇસકા ઉદ્દેશ્ય બાલક કે મરિટિષ્ક, હૃદય વ હાથ કા વિકાસ કરના હૈ । ઇસસે બાલક કા સર્વાગીણ વિકાસ હો સકે ।

22–23 અક્ટૂબર 1937 કો વર્ધા મેં અખિલ ભારતીય શાક્ષિક સમ્મેલન આયોજિત હુઆ જિસકે અધ્યક્ષ ગાંધી જી થે । ઉન્હોને અપને ભાષણ મેં અપને શિક્ષા દર્શન મેં મહત્વપૂર્ણ બિંદુઓં કો રખા તથા ‘નયી તાલીમ’ યોજના પર ચર્ચા કી । ઇસ ચર્ચા મેં વિનોબા ભાવે, કાકા કાલેલકર તથા ડૉ. જાકિર હુસૈન સહિત કર્ઝ વિદ્વાનોં ને ભાગ લિયા । જિસમેં નિમ્ન પ્રસ્તાવ પારિત કિયે ગયે :—

1. નયી તાલીમ કે અર્તાગત બચ્ચોં કો 7 વર્ષ કી આયુ સે 14 વર્ષ તક રાષ્ટ્રવ્યાપી નિઃશુલ્ક એવં અનિવાર્ય શિક્ષા દી જાયે ।

2. શિક્ષા કા માધ્યમ માતૃભાષા હો જિસસે સીખને મેં આસાની હોગી ।

3. ઇસ દૌરાન દી જાને વાલી શિક્ષા હસ્તશિલ્પ યા ઉત્પાદક કાર્ય પર કેન્દ્રિત હો । અન્ય સભી યોગ્યતાઓં ઔર ગુણોં કા વિકાસ હો ।

**નયી તાલીમ કે ઉદ્દેશ્ય** – કિસી ભી કાર્ય કો પૂર્ણ કરને કે લિએ ઉદ્દેશ્ય કા હોના આવશ્યક હૈ । નયી તાલીમ શિક્ષા દ્વારા સમાજ મેં પરિવર્તન લાને કી બાત કહતી હૈ । જિસકે ઉદ્દેશ્ય નિમ્ન હૈ :—

1. છાત્રોં કો સ્વાવલંબી બનાના ।

2. બાલક કા સર્વાગીણ વિકાસ કરના ।

3. છાત્રોં મેં આત્મવિશ્વાસ, આત્મનિર્ભરતા, નેતૃત્વ ક્ષમતા આદિ ગુણોં કા વિકાસ કરના ।

પરિકલ્પના – નિમ્ન હૈ :—

1. નયી તાલીમ છાત્રોं કો સ્વાવલંબી બનાતી હૈ ।
2. નયી તાલીમ બાળક કા સર્વાગીણ વિકાસ કરતી હૈ ।

3. છાત્રોં મેં આત્મવિશ્વાસ, આત્મનિર્ભરતા, નેતૃત્વ ક્ષમતા એવં દૃઢ સંકલ્પ શક્તિ આદિ ગુણો કા વિકાસ કરતી હૈ ।

**નયી તાલીમ કી આવશ્યકતા—શિક્ષા મેં ગુણવત્તા લાને હેતુ નયી તાલીમ કી આવશ્યકતા હૈ । ઇસકે મુખ્ય બિંદુ નિમ્નલિખિત હૈ :-**

**1. દસ્તકારી કા કામ—નયી તાલીમ કા ઉદ્દેશ્ય બાળક કો સ્વાવલંબી બનાના હૈ । નયી તાલીમ કે માધ્યમ સે ગાંધી જી હરસ્તકોશલ કો શિક્ષા કા પ્રમુખ અંગ બનાના ચાહતે થે । નયી તાલીમ ‘જીવિકા કે લિએ શ્રમ’ કી બાત કહતે હૈ । દસ્તકારી ઔર શ્રમ કે માધ્યમ સે જો શિક્ષા બાળક કો પ્રાપ્ત હોગી ઉસસે વહ જીવન કે અન્ય ક્રિલાકલાપોં સે પરિચિત હોતા હૈ । નયી તાલીમ સે બાળક ક્રિયાશીલ બનતા હૈ । જિસમેં કતાઈ, બુનાઈ, બઢ્ડાઈ કા કામ ચમડે કા કામ અન્ય દસ્તકારી કા કામ કરવાકર શિક્ષા દી જા સકતી હૈ । જિસસે ભવિષ્ય મેં બાળક કે પાસ રોજગાર ન હોને પર ભી વહ કિસી ન કિસી વ્યવસાય કે માધ્યમ સે અપના જીવન યાપન કર સકે ।**

**2. માતૃભાષા દ્વારા શિક્ષા — માતૃભાષા હમારી શિક્ષા કી નીંવ હૈ । જબ તક મનુષ્ય અપની માતૃભાષા કો અચ્છી તરહ સે બોલ એવં લિખ નહીં સકતા તબ તક ઉસકે વિચારોં મેં સ્પષ્ટતા નહીં આ સકતી । પ્રત્યેક વ્યક્તિ અપને વિચારોં કો અભિવ્યક્ત કરને કે લિએ સ્વતંત્ર હૈ ઔર માતૃભાષા વિચારોં કો અભિવ્યક્ત કરને કા સ્પષ્ટ એવં સરલ માધ્યમ હૈ । અતઃ છાત્રોં કો માતૃભાષા કે માધ્યમ સે શિક્ષા દી જાની ચાહિએ ।**

**3. વ્યક્તિત્વ કા સંપૂર્ણ એવ સામંજસ્યપૂર્ણ વિકાસ — નયી તાલીમ કા મુખ્ય ઉદ્દેશ્ય છાત્રોં કા સર્વાગીણ વિકાસ કરના હૈ । બાળક કા શારીરિક, માનસિક, સામાજિક, ધાર્મિક એવં આધ્યાત્મિક વિકાસ શિક્ષા કે માધ્મય સે હી હો સકતા હૈ । ઇન ગુણોં કા**

વિકાસ કરકે છાત્રોં કે વ્યક્તિત્વ કા સંપૂર્ણ વિકાસ કિયા જા સકતા હૈ । શિક્ષા ઐસી હોની ચાહિએ જિસસે બાળક કે વ્યક્તિત્વ, શરીર, હૃદય, મસ્તિષ્ઠ એવં આત્મા કા સામજસ્યપૂર્ણ વિકાસ હો । નયી તાલીમ ઇસી પ્રકાર કી શિક્ષા દેને કી બાત કહતી હૈ । ઇસલિએ સમૂહ મેં પ્રાર્થના, વિભિન્ન ઉત્સવોં કા આયોજન, ખેલ–કૂદ, વિભિન્ન પ્રતિયોગિતાઓં કા આયોજન, શૈક્ષિક ભ્રમણ આદિ બાતોં પર વિશેષ ધ્યાન દિયા જાતા હૈ ।

**4. છાત્ર કેન્દ્રિત શિક્ષા —નયી તાલીમ મેં છાત્રોં કો શિક્ષા કા કેન્દ્ર બિંદુ માના ગયા હૈ ।**

યહ પાઠ્યક્રમ છાત્રોં કી રૂચિ, ક્ષમતા એવં આવશ્યકતા કો ધ્યાન મેં રખકર બનાયા ગયા હૈ । ઇસ પાઠ્યક્રમ મેં કેવેલ પુસ્તકીય શિક્ષા પર જોર નહીં દિયા ગયા હૈ બલિક બાળક કે સર્વાગીણ વિકાસ કરને બાલે વિષયોં એવં ક્રિયાકલાપોં કો મહત્વ દિયા ગયા હૈ । યહ પાઠ્યક્રમ કરકે સીખને કી બાત કહતી હૈ । બચ્ચે સ્વભાવ સે ચંચલ હોતે હૈ । વે પુસ્તક કે માધ્યમ સે સીખને કે બજાએ કિસી કાર્ય કો કરકે જલ્દી સીખતે હૈ । નયી તાલીમ શિક્ષા દ્વારા શારીરિક શ્રમ, દૂસરોં કે સાથ મિલ–જુલકર કામ કરને કી આદત, જિમ્મેદારી, આત્મનિર્ભરતા એવં આત્મઅનુશાસન જૈસી ભાવનાઓં કા વિકાસ હોતા હૈ । નયી તાલીમ મેં શિક્ષક કી ભૂમિકા એક માર્ગદર્શક કે રૂપ મેં હોતી હૈ ।

**5. સમાજ ઉપયોગી નાગરિક તૈયાર કરને વાલી શિક્ષા —નયી તાલીમ બાળક કો કેવેલ સાક્ષાત્ર બનાને મેં વિશ્વાસ નહીં રખતી બલિક ઉસકે વ્યક્તિત્વ કા સંપૂર્ણ વિકાસ ચાહતી હૈ । ઇસલિએ પાઠ્યક્રમ મેં ઐસે ક્રિયાશીલ વિષયોં કા ચયન કિયા ગયા હૈ જિસસે બાળક મેં નેતૃત્વ ક્ષમતા તથા દૃઢ નિશ્ચય કી ભાવના કા વિકાસ હો સકે । ઇસકે દ્વારા બાળક મેં પરસ્પર ભાઈચારા સહયોગ તથા સમાજસેવા કી ભાવના વિકસિત હો સકે । સમાજ મેં ઉત્પન્ન સમસ્યાઓં કે સમાધાન તથા એક કુશલ વ્યવહારિક નાગરિક તૈયાર કરના નયી તાલીમ કા પ્રમુખ ઉદ્દેશ્ય હૈ । નયી તાલીમ કે માધ્યમ સે ઐસી શિક્ષા દી જા સકતી હૈ જો શ્રેષ્ઠ ઔર સમાજ ઉપયોગી**

नागरिक तैयार कर सकती है ।

## नयी तालीम संबंधी अन्य विचार –

1. छात्रों को उद्योग तथा श्रम कार्य करवा कर अपना खर्च स्वयं निकालने की आदत डलवानी चाहिए ।

2. शिक्षा द्वारा बालकों में निहित मानवीय गुणों का विकास करना ।

3. 7 से 14 वर्ष तक के बालकों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा दी जानी चाहिए ।

4. सबके लिए समान शाला अर्थात् स्त्री एवं पुरुष दोनों के लिए शिक्षा समान होनी चाहिए ।

5. शिक्षा सभी धर्म का सम्मान, छुआछुत, अंधविश्वास को दूर करने वाली मनोवृत्तियों को जन्म देने वाली होनी चाहिए ।

6. शिक्षा में सभी विषयों का महत्व है अतः हाथ के काम के साथ अन्य विषयों के अध्यापन पर ध्यान देना साथ ही संगीत एवं चित्रकला को पाठ्यक्रम में जोड़ना चाहिए ।

## नयी तालीम हेतु सुझाव –

1. शिक्षक को सूत्रधार की भूमिका में होना चाहिए जो छात्रों को विभिन्न गतिविधियों करवाये ।

2. छात्रों को तनावमुक्त वातावरण प्रदान करना चाहिए ।

3. शैक्षिक गतिविधियों में छात्रों के अभिभावकों को भी जोड़ना चाहिए ।

4. अभिव्यक्ति हेतु मातृभाषा महत्वपूर्ण स्थान रखती है अतः शिक्षक को अधिगम प्रक्रिया में मातृभाषा का प्रयोग करना चाहिए ।

5. हस्तकौशल, बागवानी तथा विभिन्न गतिविधियों के साथ-साथ सैद्धांतिक विषयों पर भी ध्यान देना चाहिए ।

6. शिक्षकों को भी नयी तालीम के लिए प्रशिक्षित करना चाहिए ।

**नयी तालीम का महत्व** – समाज में परिवर्तन लाने के लिए शिक्षा एक मात्र साधन है । शिक्षा पद्धति में भी समय-समय पर बदलाव होना आवश्यक है । नयी

तालीम इन्ही बातों को साकार करता है । परिवर्तन की प्रक्रिया निरंतर होती रहती है परंतु यह एक जटिल प्रक्रिया है । शिक्षा भी अगर एक ही ढरें पर चलती रहेगी तो समाज में परिवर्तन लाना संभव नहीं हो पायेगा । नयी तालीम सामाजिक परिवर्तन के लिए शिक्षा है । इसका उद्देश्य सभी का शैक्षिक-आर्थिक तथा सामाजिक विकास करना है खासकर समाज के पिछड़े वर्ग को शोषण से मुक्त करके एक समतावादी समाज का निर्माण करना । शिक्षा व्यक्ति में आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, नेतृत्व क्षमता तथा दृढ़ संकल्प शक्ति आदि गुणों का विकास करने वाली होनी चाहिए । शिक्षा केवल गणित, विज्ञान या अन्य विषयों के रान्त सिद्धांत तक सीमित नहीं होना चाहिए बल्कि कक्षागत गतिविधियों का होना भी आवश्यक है । नयी तालीम करके सीखना पर जोर देती है । यह बालकों में उत्पादकीय शक्ति को बढ़ावा देती है । ताकि रोजगार के लिए उह्ये किसी और का मुंह ना ताकना पड़े । गांधी जी द्वारा बताये गये नयी तालीम के सिद्धांतों को ग्रामीण क्षेत्र में फैलाने की आवश्यकता है । परिवर्तन के इस दौर में लोगों को सही दृष्टिकोण प्रदान करने वाली शिक्षा की आवश्यकता है । नयी तालीम व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक पक्षों का पुनर्निर्माण करती है ।

**मैट्स स्कूल ऑफ एजुकेशन**  
**मैट्स विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)**  
**मोबा. 9926119054**

## संदर्भ:-

1. श्रीवास्तव, वंशोधार नयी तालीम – सर्व सेवा संघ की मासिकी, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजधानी वाराणसी पृ.क्र.41–45
2. आधुनिक विश्व के संदर्भ में भारतीय शिक्षा राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, रायपुर, छत्तीसगढ़, 2019 पृ.क्र. 91–154
3. परमार, डॉ. अशोक 'नई तालीम और आधुनिक शिक्षा पद्धति की समीक्षा' जनरल ऑफ ऐजुकेशनल एंड साइकोलॉजिकल रिसर्च (Vol & 2, No-2) July 2012, पृ.क्र. 145–149
4. नई तालीम की रूपरेखा, डॉ. जाकिर हुसैन समिति की रिपोर्ट से अंश, शिक्षा विमर्श, जुलाई–अगस्त, 2009 पृ.क्र. 9–16
5. <https://hi-m-wikipedia-org/wiki/o/kkZ>–शिक्षा योजना

# ભૂમંડલીકરણ કે દૌર મેં સાંસ્કૃતિક સંક્રમણ : કાશી કા અરસી

- મનોજ કુમાર (શોધાર્થી)

**શોધ કા સાર –** ભૂમંડલીકરણ કે ઇસ જાલ મેં ફરસે હુએ દેશ અપની કલા, સંસ્કૃતિ, સમ્યતા આદિ કો નષ્ટ કરતે જા રહે હું—એક ખાસ તરહ કી ગુલામી ઉનકા પીછા કર રહી હૈ। જિસકે ચંગુલ સે બચ પાના મુશ્કિલ હૈ, ભૂમંડલીકરણ હમારી સાંસ્કૃતિક, સામાજિક ઔર રાજનીતિક ક્ષેત્ર મેં દખલંદાજી કર રહા હૈ। ક્યાંકે ભૂમંડલીકરણ કી પહુલી શર્ત હૈ કી અપની વ્યાપાર, વસ્તુઓં તથા સાંસ્કૃતિક ગતિવિધિયો આદિ કા આદાન—પ્રદાન કરના। ચૂકી યહ પ્રભાવ અસ્સી ઘાટ પર ભી હો રહા હૈ। અપિતુ કહા જાએ તો અસ્સી ઘાટ પર હી નહીં પૂરે ભારત પર ઇસકા પ્રભાવ પડ્ય રહા હૈ। જો પ્રભાવ અસ્સી કી સંસ્કૃતિ પર પડા ઉસે કાશીનાથ સિંહ ને દેખા, સમજા ઔર અપને ઉપન્યાસ “કાશી કા અસ્સી” મેં લિખા હૈ। યાં હું ઇસ ઉપન્યાસ કા વિશ્લેષણ ભૂમંડલીકરણ કે પરિપેક્ષય મેં કિયા ગયા હૈ।

**વીજ શબ્દ—**ભૂમંડલીકરણ, અસ્સી ઘાટ, સંસ્કૃતિ, કાશી, ભારતીયતા આદિ।

ભૂમંડલીકરણ કે દૌર મેં સર્વાધિક સંક્રમિત હુઈ હૈ તો વહ હૈ, કિસી દેશ કી સંસ્કૃતિ! કિસી દેશ યા સ્થાન કી અપની સ્થાનીય સંસ્કૃતિ હોતી હૈ, જિસકે કારણ ઉસ સ્થાન કા અપના મહત્વ હોતા હૈ। સ્થાન કે સાંસ્કૃતિક મહત્વ સે જુડી કર્ઝ ઘટનાએં હોતી હૈનું। વો ઘટનાએં ઐતિહાસિક ઔર કિબદ્ધિયોં કે માધ્યમ સે લોક પ્રચલિત હોતી રહતી હૈનું। જિસ પ્રકાર સે હરિશંદ્ર ઘાટ, દશાશ્વમેધ ઘાટ, રાજઘાટ, કેદાર ઘાટ આદિ કા નામ આતા હૈ ઔર ઉસસે જુડા પ્રાચીન ઐતિહાસિક મહત્વ હૈનું। વૈસે હી અસ્સીઘાટ સે જુડા પ્રાચીન સાંસ્કૃતિક ઇતિહાસ હૈ કી ગોસ્વામી તુલસીદાસ જી ઇસી ઘાટ પર બેઠકર “રામચરિતમાનસ” કી રચના કરતે થે ઔર કથા કા પાઠ ભી કરતે થે। અંતઃ ઉન્હોને અપને જીવન કે અંતિમ દિન યાંથી પર ગુજારે થે, ઔર યાંથી સે વે મોક્ષ કો પ્રાપ્ત હુએ થે। ગોસ્વામી તુલસીદાસ કે સ્વર્ગવાસ કે સંદર્ભ મેં લોક પ્રચલિત હૈ કે—

સંવત્ સોલહ સૌ અસી, અસી ગંગ કે તીર |

શ્રાવણ શુક્લા સપ્તમી, તુલસી તજ્યો શરીર |

યાની યહ વહી અસ્સી ઘાટ હૈ, જહાં પર ગોસ્વામી તુલસીદાસ જી અપને જીવન કે અંતિમ ક્ષણ વ્યતીત કિએ થે ઔર સ્વર્ગવાસી હુએ થે। અત: ઇસે વર્તમાન મેં “સુબહ” – બનારસ “કે નામ સે ભી જાના જાતા હૈનું।” અસ્સી સે લેકર આદિકેશવ કે બીચ બનારસ કી ગંગા પર કુલ 64 ઘાટ નિર્મિત થે, કિન્તુ અભી હાલ હી મેં નગવા લકા કે પાસ રવિદાસ નામક એક અતિ સુંદર નયા ઘાટ સ્થાપિત હુआ હૈ,

જિસે માયાવતી કી સરકાર ને બનવાયા હૈ<sup>1</sup> આજ ભી અસ્સી ઘાટ કુછ જીર્ણોદ્વાર કે ઉપરાંત પર્યટકોં કે લિએ આકર્ષણ કા કેંદ્ર બના હૈ। યાં કી સંસ્કૃતિ કો આપ આજ ભી દેખ સકતે હૈનું, અસ્સી ઘાટ કી સંસ્કૃતિ કા અપના અલગ સ્વાદ હૈ। ઉસ સંસ્કૃતિ કે સ્વાદ સે ઓતપ્રોત હૈ યહ અસ્સી ઘાટ। ઇ. બી. ટેલર જી કા માનના હૈ કી—“ઉન સભી વસ્તુઓં કે સમૂહ કો, જિનમે જ્ઞાન, ધાર્મિક વિશ્વાસ, કલા, નૈતિક કાનૂન, પરમ્પરાએં તથા વે અન્ય સભી યોગ્યતાએં સમ્મિલિત હોતી હૈનું, જિન્હેં કોર્ઝ મનુષ્ય સમાજ કા સદર્શ હોને કે નાતે સીખતા હૈ, સંસ્કૃતિ કહતે હુંનું।” યહી સંસ્કૃતિ હમારી પહ્યાચાન હોતી હૈ। ભારતીયતા કે લિએ કાશીનાથ સિંહ ઇસી ઘાટ કી મહિમા કા વર્ણન કરતે હુંનું, “સબસે પહલે ઇસ મોહલ્લે કા મુખ્તસાર—સા બાયોડાટા—કમર મેં ગમજા, કંધે પર લંગોટ ઔર બદન પર જનેજુ—યહ યુનિફાર્મ હૈ અસ્સી કા!”<sup>2</sup> આપ અસ્સી ઘાટ પર આજ ભી યહ દૃશ્ય દેખ સકતે હૈનું। યાં કી સંસ્કૃતિ કો આપ યાં કે લોગોં કે મન—વચન મેં સમાહિત રૂપ મેં દેખેંગે। એક અલ્હડપન યાં કે લોગોં મેં આપકે દેખને કો મિલેગા। મિત્રોં કો એક વિશેષ ઉપાધિ સે સંબોધિત કરતે હુએ આપ શ્રવણ કરેંગે। મૌજ—મરસ્તી સે ઓતપ્રોત યાં કે પ્રાણી અપને રંગ મેં રંગ મિલેંગે।” સભી કો સમાન નામ સે નામિત કરને કે લિએ પ્રસિદ્ધ યહ નગરી અપની અલગ પહ્યાચાન કે લિએ પ્રસિદ્ધ હૈ। “ગુરુ” યાં કી નાગરિકતા કા “સરનેમ” હૈ। ન કોર્ઝ સિંહ, ન પાંડે, ન જાદો, ન રામ ! સબ ગુરુ ! જો પૈદા ભયા, વહ ભી ગુરુ, જો મરા, વહ ભી ગુરુ !<sup>3</sup> ગુરુ નામ સે પુકારને કી એક શૈલી હૈ। ઔર યહ શૈલી સભી કો સમાન શ્રેણી મેં લાકર ખઢી કર દેતી હૈ। સમતા, સમાનતા, બંધુત્વ કી બાત કરતી હૈ। યહ શબ્દ ગુરુ। યહ સંસ્કૃતિ હૈ અસ્સી કી જિસ પર બાહ્ય સંસ્કૃતિયોં કા નિરંતર પ્રહાર હો રહા હૈ। ઇસ પ્રહાર સે યાં કી સંસ્કૃતિ કો કાફી નુકસાન હો રહા હૈ। યહ દૃશ્ય અસ્સી ઘાટ યા બનારસ કા હી નહીં હૈ અપિતુ પૂરે ભારત કી સંસ્કૃતિ કા હૈ જિસ પર ભૂમંડલીકરણ કી વજહ સે બાહ્ય સંસ્કૃતિયોં કા પુરજોર પ્રહાર હો રહા હૈ। જિસકે પરિણામ સ્વરૂપ અમાનવીય સંસ્કૃતિ કા જન્મ હો રહા હૈ।

અસ્સી અપને ત્યોહારોં કો અપને દંગ સે મનાતી હૈ। અપની સાંસ્કૃતિક પહ્યાચાન કે લિએ પ્રસિદ્ધ કાશી નગરી કા અસ્સી ઘાટ વિદેશીયોં કે લિએ એક અપની અલગ પહ્યાચાન રહ્યી હૈ। કાશીનાથ અસ્સી કી સંસ્કૃતિ કે બારે મેં કહતે હૈનું, “તો સાહબ, જાનિએ કિ ભાંગ અસ્સી કી સંસ્કૃતિ હૈ। ઔર જબ સંસ્કૃતિ હૈ તો કોર્ઝ—ન—કોર્ઝ પરંપરા ભી જરૂર હોગી ઔર વહ પરંપરા હૈ હોલી કા વિશ્વ પ્રસિદ્ધ કવિ—સમ્મેલન !<sup>4</sup>

विशेष त्योहारों का अपनी अलग मौज—मरती होती है “अस्सी घाट” पर।<sup>5</sup> अपने अलहड़पन के लिए प्रसिद्ध अस्सी और अस्सी के लोग यहां तो अस्सी किसी भी वी.आई.पी. को पी.आई.जी. (पिग=सूअर) के बराबर भी नहीं समझता, समूचे त्रिकाल और त्रैलोक्य को अपने फोट पर लिए धूमता रहता है—छुट्टा सांड की तरह!<sup>6</sup> उसे दुनिया जहान की कोई पड़ी, परवाह नहीं अपनी दुनियां में मरत रहने वाली काशी नगरी और यह घाट अस्सी है। इस संस्कृति पर बाह्य देशों का प्रभाव पड़ने लगा है। भूमंडलीकरण के उपरांत यहां की संस्कृति पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है। बाह्य देश की संस्कृतियां यहां की संस्कृतियों को प्रभावित करने का काम कर रही हैं। अस्सी बनारस का मोहल्ला नहीं है। अस्सी “अष्टाध्यायी” है और बनारस उसका “भाष्य”。 पिछले तीस—पैंतीस वर्षों से “पूंजीवाद” के पगलाए अमरीकी यहां आते हैं और चाहते हैं कि दुनिया इसकी “टीका” हो जाए... मगर चाहने से क्या होता है? दुनिया तो बहुत कुछ चाहती है।

“अस्सी सिफ मुहल्ला नहीं, भूमंडलीकरण और बाजारवाद के बाद का पूरा भारत है!”<sup>7</sup> आप एक स्थान पर पूरे भारत का स्वरूप देख सकते हैं। किस प्रकार से भूमंडलीकरण और बाजारवाद ने अस्सी की संस्कृति को बदल दिया है। संस्कृति हमारी मौलिक पहचान होती है। जिसमें हम सभी रंगे रहते हैं। रामधारी सिंह दिनकर के अनुसार, “संस्कृति मानव जीवन में उसी तरह व्याप्त है, जिस प्रकार फूलों में सुगंध और दूध में मक्खन। इसका निर्माण एक या दो दिन में नहीं होता, युग—युगांतर में संस्कृति निर्मित होती है।”<sup>8</sup> लेकिन भूमंडलीकरण के उपरांत विदेशी संस्कृतियों का आगमन होने से भारतीय संस्कृति में परिवर्तन व्यापक फलक पर हुआ। भूमंडलीकरण के इस जाल में फंसते हुए देश अपनी कला, संस्कृति को नष्ट करने की ओर बढ़ ही रहे हैं—एक खास तरह की गुलामी उनका पीछा कर रही है। जिसके चंगुल में हम फंस रहे हैं, भूमंडलीकरण के द्वारा अपनी वास्तविकता को खोकर यह संभव हुआ है। क्योंकि भूमंडलीकरण की पहली शर्त होती है अपने व्यापार, सांस्कृतिक गतिविधियों का आदान—प्रदान करना है। तो प्रभाव अस्सी घाट पर भी हुआ, अपितु कहा जाए तो अस्सी घाट पर ही नहीं पूरे भारत पर इसका प्रभाव पड़ा। अस्सी की संस्कृति पर गहरा प्रभाव पड़ा जिसको काशीनाथ जी ने देखा समझा और लिखा है। बाहर देशों से आने वाले सेलानियों के द्वारा जो बदलाव आया है काशीनाथ सिंह रेखांकित करते हैं कि “मित्रों, डॉ. गया सिंह विद्वान भी हैं और बुद्धिमान भी। उन्हें समझते देर नहीं लगी कि यह भारतीय संस्कृति पर हमला है। गांजा—भांग की संस्कृति पर! जब से अस्सी पर अंगरेज—अंगरेजिन आने शुरू हुए हैं तभी से मुहल्ले के लौड़े

हेरोइन और ब्राउन शुगर, चरस के लती हो रहे हैं। ये डाल्टनगंज के नहीं, अस्सी के ही हैं।”<sup>9</sup> विदेशियों के आगमन से उनकी संस्कृति का आगमन होना स्वाभाविक है क्योंकि एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति से मिलने पर भी बहुत—सी चीजों का आदान—प्रदान होता है। यही जब वैशिक स्तर पर देखा जाता है, तो एक देश का दूसरे देश के मिलाप पर वहां की संस्कृति एक—दूसरे देश के साथ मेल—मिलाप हो जाती है।

“अस्सी घाट की अपनी एक अलग संस्कृति है। उसकी अपनी अलग हर्षलालस रही है। रागों, रंगों और रेखाओं और चिठ्ठियों की चह—चह का अद्भुत कोलाज है, यह घाट! सुबह—शाम यहां पेंसिल और कैनवास लिए चित्रकार भी बैठे मिलेंगे, कैमरा लटकाए छायाकार भी, रियाज मारते गायक—वादक भी, पुजाइया के गीत गाती औरतें भी, धुनी रमाए जोगी भी! बाकी तो मल्लाह हैं, अखाड़िए पहलवान हैं, साधु—सन्न्यासी हैं, कीर्तनियाँ हैं, भिखरियाँ हैं...।”<sup>10</sup> इन सबको लेकर बनता है अस्सी घाट जो आज भी आपको देखने को मिलेगा। अपनी संस्कृति के पहचान के कारण विश्व भर में प्रसिद्ध यह काशी का “अष्टाध्यायी” भारत में अलग छाप छोड़ती है। लेकिन भूमंडलीकरण के कारण आज यह अपनी मौलिकता को खो रही है। बाह्य संस्कृतियों का संक्रमण जोरों—शोरों से हो रहा है। अस्सी घाट की मौलिकता लुप्त हो रही है। “जग्ग मल्लाह के शब्दों में पिछले कुछ वर्षों से यह घाट, अंगरेज—अंगरेजिनों का परमसिंह एग्जाई जमीनी हाउसवोट हो गया है। रोज शाम को ढाई—तीन सौ अंग्रेज जोड़ों में या अकेले सीढ़ियों पर बैठते हैं और देर रात तक बैठे रहते हैं।”<sup>11</sup> यही अंग्रेज अपनी संस्कृति को लाकर यहां की संस्कृति में घोल रहे हैं। जिसके परिणाम स्वरूप यहां के लोगों की मानसिकता में परिवर्तन हो रहा है। पाश्चात्य संस्कृतियां इनको लुभा रही हैं और यह लोलुपता भारतीय संस्कृतियों के अंदर समाहित हो रही है। “जब देखा जाए तो मिलता है कि इन विदेशियों के पास भौतिक सुख—सुविधा की समस्त चीजें उपलब्ध होते हैं तो भी वह सुखी नहीं हो सकता क्योंकि सुख के लिए मानसिक सुख का होना जरूरी होता है, तब व्यक्ति सुखी होता है। भूमंडलीकरण हमारी जरूरत की चीजें तो दे सकता है, लेकिन सुख नहीं दे सकता। इसलिए उनके पास सब कुछ होने पर भी वे प्रसन्न नहीं रहते हैं। और वे अपनी संस्कृति से

ઉકતાએ હુએ લોગ હૈનું।” ક્યોંકિ અસ્સી કે અંગરેજ—અંગરેજિનોં કી એક ખાસ ઉમ્ર થી—તીસ—પૈંતીસ કે કરીબ ! ઇંડિયન કલ્યાર, ઇંડિયન મ્યૂજિક, ઇંડિયન સ્કલ્પચર, ઇંડિયન ડાંસ, ઇંડિયન દેવી—દેવતા, તંત્ર—મંત્ર, ધ્યાન, યોગ, સાધના—યે સબ કે સબ ઉનકે શૌક ભી હો સકતે થે ઔર મજબૂરી ભી ! જ્યાદાતર અપને મનીઆર્ડર ડાલર કા ઇંતજાર કરતે । અસ્સી પર એક આદમી કે લિએ સૌ ડાલર હી કમ નહીં થે મહીને મેં । ચાહે જૈસે રહ લો, ચાહે જહાં ખા લો, ચાહે જહાં સો લો । યહાં હજાર ડાલર માને અમીર લેકિન ઉનકે યહાં ? ક્યા ઇતને મેં સમ્માન કે સાથ જીના મુમકિન હૈ વહાં ?<sup>12</sup> હમ તીસરી દુનિયા કે દેશોનું મેં આતે હું, ઔર ઇસકા ફાયદા પહલી દુનિયા કે દેશ લેતે હું । હમારે પાસ વહ સબ કુછ હૈ, જો ઉનકે પાસ નહીં હૈ ।

પહલી દુનિયા કે ઉકતાએ લોગ યહાં આતે હું । સાંસ્કૃતિક સંક્રમણ સે હમેં સંક્રમિત કરતે હૈનું । ઇસ સંક્રમણ સે પ્રભાવિત બનારસ (કાશી નગરી) પર કૈથરીન અપની કિતાબ લિખતી હૈનું ઔર અપને આંકડે સભી કો બતાતે હુએ કહતી હૈનું સહોદર જી, આંકડે હૈનું મેરે પાસ રોડો, સાડોં ઔર સન્યાસિયોં કે । મૈં બતા સકતી હું કી પિછળે પાঁચ સાલોં મેં હી ઇતના અંતર આયા હૈ ઇનીસી સંચયા મેં ? બુરા ન માનેં તો મેં કહના ચાહતી હું કી “વારાણસી ઇજ ડાઇંગ” બનારસ જિસે લોગ પઢતે, સુનાતે, જાનતે થે — મર રહા હૈ આજ !<sup>13</sup> ઇસમાં કોઈ દો રાય નહીં હૈ બનારસ કી સંસ્કૃતિ પર ખતરા મંદરા રહા હૈ । સંસ્કૃતિ કા પરિવર્તન હો રહા હૈ લેકિન એસા ક્યોં હો રહા હૈ યહ ભી વિચારણીય હૈ । ઇસ સંદર્ભ મેં ઉપન્યાસ કે પાત્ર ડૉ. ગયા સિંહ કહતે હૈનું કી “ઘંટે—ભર સે સિર હિલા રહે હું આપ ઔર વહ કહ રહી હૈ કી બનારસ મર રહા હૈ । ઇસી બનારસ મેં હમ ભી હું, આપ ભી હું ઔર યહ અસ્સી ભી હૈ, ઇસી બનારસ કે લિએ સાત સમંદર પાર સે દૌડું લગા રહે હું યહ અંગરેજ, લેકિન યહ કહ રહી હું ઔર આપ સિર હિલા રહે હું — સિર્ફ ઇસલિએ કી પાઁચ સૌ રૂપએ દિહાડી પર ઘર દૈઠે આપકો કામ ચાહિએ, એક એસા વિદેશી કિરાએદાર ચાહિએ જિસકી ખાતિરદારી મેં આપકા પૂરા પરિવાર લગા રહે હું । યહ નહીં દેખ રહે હું કી યહી સાલે માર રહે હું બનારસ કો ઔર કહ રહે હું કી મર રહા હૈ !<sup>14</sup> સહી બાત હૈ વિદેશિયોં કે આગમન ઔર પેંગ ગેસ્ટ કે રૂપ મેં અસ્સી ઘાટ પર ઠહરના, યહ પ્રક્રિયા વહાં સંસ્કૃતિ પર ગહરા પ્રભાવ ડાલતા હૈ । ભૂમંડલીકરણ હમેં માનસિક રૂપ સે તૈયાર કરતા હૈ અપને ફાયદે કે લિએ । દૂસરોં કી ચાર ભલી—બુરી બાતોં કો સુન લેના ચાહિએ । પ્રત્યક્ષ મેં ફાયદા હો રહા હો ભલે અપ્રત્યક્ષ રૂપ સે નુકસાન હી ક્યોં ન હો । વિદેશિયોં કે આગમન સે ભારતીય સંસ્કૃતિ પર જો પ્રભાવ પડે રહા હૈ । ઉસે આપ બનારસ કે

સંસ્કૃતિ પર દેખ સકતે હૈનું ।” બનારસ તો મર રહા હૈ લેકિન વહાં સે નહીં જહાં કે આંકડે દેવી જી દે ગઈ હું । દેવી જી, તુમ્હારે પાસ તો પૂરે નગર કે હૈનું લેકિન મેરે પાસ તો સિર્ફ અસ્સી કે હી હૈનું । ઔર ઉન્હીં કી બિના પર મૈં બતા સકતા હું કી સીદ્ધિયોં પર કિતને કિલો હેરોઇન, કિતને કિલો બ્રાઉન શુગર, કિતને કિલો ચરસ ઔર કિતને ડિબ્બે માર્ફિન કી ખપત હું હૈ ઇસ બીચ ? ઘાટોં પર વિયાગ્રા, પેનાગ્રા ઔર કિન—કિન ચીજોં કે પાઉડર બિક રહે હું પુડ્ધિયોં મેં ? દો—દો સૌ રૂપયે એક—એક પુડ્ધિયા ! ઔર ખરીદ કૌન રહે હું—બૂઢે ! ચોરી—છુપે ! પેંશન કી રકમ રોટી—દાલ મેં નહીં પુષ્ટિ મેં જા રહી હૈ । ઔર સુનો, ગુંબારે ઔર ગુલ્લી ડંડા કી ઉમર વાલે બચ્ચે ઘાટ ઔર છત ઔર ખિડકિયાં દેખ — દેખકર જવાન હો ગએ હું સમય સે પહલે હી ! કિસ તરહ ઘૂરતે હું ઇસી ઉમ્ર મેં સથાની લડકિયોં કો કબી દેખા હૈ ?<sup>15</sup> બદલતી સંસ્કૃતિયોં કા યહ આજ જીતા જાગતા સબૂત હૈ કી કિસ પ્રકાર સે કાશી ઘાટ કી સંસ્કૃતિક પરંપરા મેં પરિવર્તન હો રહા હૈ । યહ પરિવર્તન બાહર સે આને વાલે વિદેશિયોં કે કારણ હો રહા હૈ । વહ અપની અમાનવીય સંસ્કૃતિયોં કા પ્રસાર કર રહે હું । હમ ભારતીય બાહ્ય સંસ્કૃતિ કે પ્રભાવ મેં જલ્દી હી સંક્રમિત હો જાતે હું ।

**કેરલ કેંદ્રીય વિશ્વવિદ્યાલય, હિન્દી વિભાગ,  
સિંધુ બ્લાક, પેરિયા, કાસરગઢ, કેરલ ,671320  
મો. ન . 9616261316**

## સંદર્ભ:-

1. મર્ગિકર્ણિકા, ડૉ તુલસીરામ, રાજકમલ પ્રકાશન, નર્ઝ દિલ્લી પૃષ્ઠ સં –11
2. કાશી કા અસ્સી, કાશીનાથ સિંહ, રાજકમલ પ્રકાશન, પૃ. સં –11
3. કાશી કા અસ્સી, કાશીનાથ સિંહ, રાજકમલ પ્રકાશન, પૃ.સં –12
4. કાશી કા અસ્સી, કાશીનાથ સિંહ, રાજકમલ પ્રકાશન, પૃ.સં –19
5. કાશી કા અસ્સી, કાશીનાથ સિંહ, રાજકમલ પ્રકાશન, પૃ.સં –76
6. લેખક કી છેઢાડુ, કાશીનાથ સિંહ, કિતાબ ઘર, નર્ઝ દિલ્લી, પૃષ્ઠ સં –150
7. <http://bharatdiscovery-org/indiya>
8. કાશી કા અસ્સી, કાશીનાથ સિંહ, રાજકમલ પ્રકાશન, પૃષ્ઠ સં –81
9. કાશી કા અસ્સી, કાશીનાથ સિંહ, રાજકમલ પ્રકાશન, પૃષ્ઠ સં –98
10. કાશી કા અસ્સી, કાશીનાથ સિંહ, રાજકમલ પ્રકાશન, પૃષ્ઠ સં –99
11. કાશી કા અસ્સી, કાશીનાથ સિંહ, રાજકમલ પ્રકાશન, પૃષ્ઠ સં –105
12. કાશી કા અસ્સી, કાશીનાથ સિંહ, રાજકમલ પ્રકાશન, પૃ.સં –106
13. કાશી કા અસ્સી, કાશીનાથ સિંહ, રાજકમલ પ્રકાશન, પૃ. સં –110
14. કાશી કા અસ્સી, કાશીનાથ સિંહ, રાજકમલ પ્રકાશન, પૃ.સં –110
15. કાશી કા અસ્સી, કાશીનાથ સિંહ, રાજકમલ પ્રકાશન, પૃ.સં –111

संदर्भ - रविदास जयंती

## मैं कठौती की गंगा

मैं सीधा मेरुदंड हूं  
मैं अगरबत्ती का गंध धूम  
मैं अभय हूं

मैं अजय हूं  
मैं कठौती की गंगा हूं

अध्यात्म मेरा पुरुषार्थ  
मैं ममता समता के हितार्थ  
मैं भक्ति का छंद  
मैं निष्ठा अनुबंध

श्रम में राम  
राम में श्रम  
मेरा उपक्रम

पारस पथर नहीं  
पसीने की बूँद ही मेरा पारस  
तुम जल से नहा कर  
केवल स्वच्छ होते हो  
मैं पसीने से नहा कर  
पवित्र होता हूं

मै कर्मशील  
मैं चर्म शिल्पी  
चमड़ा मेरे जीवन का सच

विराग-पुष्प का पराग मैं  
दलितों का महाभाग मैं  
अस्पृश्यता मेरी नहीं  
तुम्हारी समस्या  
तुम्हारा मन आज भी  
अमावस्या !

कल मैं कंमाच था  
आज मैं पलाश हूं  
मैं प्रणत रविदास हूं ।

"बेगम पुरा" मेरी बस्ती का नाम  
स्वागत है  
आइए, आपके लिए भी इसमें  
रक्षित है एक धाम !

- डॉ. देवेंद्र दीपक

डी-15 शालीमार गार्डन  
कोलार टोड भोपाल

ईमेल - drdevendradeepak@gmail.com

- \* जाति-पाँति के फेर में उरझि रहे सभ लोग ।  
मनुषता को खात है, जाति-पाँति को रोग ॥
- \* जनम जात मत पूछिये, का जात अरू पात ।  
रविदास पूत सभ प्रभु के, कोउ नाहि जात कुजात ॥
- \* उपजैहू सभ एक बूँद से का बामण का सूद ।  
मुखजन ना जानई सभ मँह राम मजूद ॥
- \* रविदास जनम के कारण, होत न कोउ नीच ।  
नर कूं नीच करि डारी है, ओछे करम की कीच ॥
- \* रैदास बामन न पूजिये, जऊ हौवे गुनहीन ।  
पूजियै चरन चाण्डाल के, जऊ हौवे गुन परवीन ॥

पंजीयन संख्या

RNI No. MPHIN/2002/9510

डाक पंजीकृत क्रमांक मालवा डिवीजन/204/2021-2023 उज्जैन (म.प्र.)

प्रतिष्ठा में,

---



---



---



---



पत्र व्यवहार का पता :  
20, बागपुरा, सांवेर रोड,  
उज्जैन 456 010 (म.प्र.)



प्रकाशक, मुद्रक पिंकी सत्यप्रेमी ने भारती दलित साहित्य अकादमी की ओर से  
मालवा ग्राफिक्स , 29, वरस्थि मार्ग, गुरुद्वारे के सामने, फ्रीगंज, उज्जैन फोन : 0734-4000030 से मुदित एवं  
20, बागपुरा, सांवेर रोड, उज्जैन 456 010 (म.प्र.) फोन : 0734-2518379 से प्रकाशित।

सम्पादक : डॉ. तारा परमार

फरवरी 2022